श्रीयुगलसत-शतक

पु० नं० ५२

॥श्रीराधाकृस्नाभ्यांनमः॥ श्रीराधा॥

॥श्रीजुगलसतकीपुस्तक॥ श्रीराधे॥

राधा श्रीराधाकृष्णाय नमः अथ मंगलसतलिष्यते ॥ देवेंद्रमौलिमंदारमकरंद
॥१॥ कणारुणा ॥ विघ्नं हरंतु श्रीराधाकृपादाब्जरेणव ॥१॥ छप्पै कल्पविटपश्रीभटप्र
कृ गटकलिकल्मषदुखहरक ॥ जे नर आवैं सरन ताप त्रिय तिनकी हरहीं ॥ तत रसीजे
होई हस्तजामस्तक धरहीं ॥ गुणनिधि रसिक प्रवीन भक्ति रस राधाको आगर राधा
कृष्णस्वरूप ललिततलीलारससागर ॥ कृपादृष्टि संतनि सषर भक्त भूप द्विजवंशाव
तंस कल्पविटपश्रीभटप्रगट कलिकल्मषदुषहरण ॥१॥ अथ श्री आरिवारती ॥१॥

न्नसतलिष्यते।तत्रप्रथमसिद्धांतसुषपरछ्या।भासजुत।राग।केरौछ्या।भास
दे।हा।चरनकमलकीदीजियैसेवासहजरसाल।घरजायौमोहिजानिकैंचे
रौमदनगुपाल।१।राग।केदारौ।पद२।कृतालामदनगुपालसरनतेरीआयौ॥
चरनकमलकीसेवादीजैचेरौकरिराख्यौघरजायौ।टेक।धनिधनिमातु॥
पितासुतवंधुधनिजननीजिनगोदखिलायौ।धनिधनचरनचलैंतीरथकौं
धनिगुरजिनिहरिनामसुनायौ।जेनरविमुषभएगोविंदसौंजनमअनेक

महाउषपायौ॥श्रीमटकेप्रभुदियौ॥अभपदजमडरप्यौ॥जवदासकहायौ॥१॥
श्रीभामसराहा॥स्यामास्यामसरूपौ॥परिस्वारथविसर्यौ॥जु॥जाकौमनआनंदघ
नवृंदाविपिनहर्यौ॥जु॥प्रदइकत्तला॥जाकौमनवृंदाविपिनहर्यौ॥स्यामास्या
मसरूपसरोवरपरिस्वारथविसर्यौ॥टेक॥निरषिनिकुंजपुंजछविराधेकृ
ष्ननाममउरधर्यौ॥श्रीभटराधेरसिकरायनाहिसर्वसुदैनिवर्यौ॥२॥श्रीभा
मसरोहा॥जाकौनामहिलेतमनदेत्तजुगलनिजकूलाजैजैवृंदावनजुहैम ॥२॥

हाआनंदकौमूल॥पद३कताला॥जैजैश्रीवृंदावनआनदमूल॥नामलेत
पावतजुपशापरतिजुगलकिशोरदेतनिजकूल॥टेक॥सरनआयेपाएरा
धाधवमिटीअनेकजनमकीभूल॥ऐसेंजानिवृंदावनश्रीभटरजपरजैं
परवारिकोटिमघतूल॥४॥राग आसावरी॥मोहनव्रजवनभूमिसवमोहन
सहजसमान॥मोहनजमुनाकुंजजहांविहरतहैंजुवराज॥पद४कताल व्रज
भूमिमोहनीहमैजानी॥मोहनकुंजमोहनश्रीवृंदावनमोहनजमुनापानी॥

।।वानी।। मोहननागरिसकलगोकुलकीबोलतिमोहनबानीश्रीभटकेप्रभुमोहननागा
।३।। रमोहनराधानी।।४।।दोहा।।सेव्यहमारेंहैसदावृंदाविपिनविलास।।नंदनंदन
वृषभानुजाचरनअनन्यउपास।।पद एकताल।।संतौसेव्यहमारेश्रीप्रियाप्यारे
श्रीवृंदाविपिनविलासी।।नंदनंदनवृषभाननंदिनीचरनअनन्यउपासी।।मत्त
प्रणायवसमसदाएकरसविविधिनिकुंजनिवासी।।जैश्रीभटजुगलवंशी
वटसेवतसूरतिसवसुखरासी।।५।।दोहा।।ज्ञानकहेअज्ञानेंनउरहहरिगुरूसों ।।३।।

रत्तिहोइ॥सबनिधिस्यामास्यामकेपदपावैभलसोइ॥परदुकताल॥स्या
मास्यामपदपावैसोई॥मनवचक्रमकरिसदानिरंतरहरिगुरुपरपंकजरनि
होई॥नंदसुवनवृषभानसुतापदभजैतजैमनआनैंजोई॥श्रीभटअटकि
रहेंस्वामीपनआनकहैंमानैसवखोई॥६॥दोहा॥जनमजनमजिनकेसदा
हमचाकरनिसिभोर॥त्रिभुवनपोषनसुधाकरठाकुरजुगलकिशोर॥परदु
कताल॥जुगलकिशोरहमारेठाकुर॥सदासर्वदाहमजिनकेहैंजनमजनमघ

८

॥वानी॥ रजाएचाकर॥टेक॥चूकपरैंपरहैरैनकवहींसवहीभांतिद्याके आगर॥जै
॥४॥ श्रीभटप्रगटत्रिभुवनमैप्रनतनिपोषनपरमसुधाकर॥७॥ आभासदोहा॥म
नमटालमैंठगौअरुजियजपरौजमजाल॥ आलसउपज्यौआनसौंलालसप
रज्जगलाल॥पदईकलाल॥निसिदिनलगिपरहौयहलालस॥स्यामास्याम
चरकीसेवाविनाआनसौंउपज्यौआलस॥टेक॥कहतसुनायसमनवचक्र म
कपिउरम्हिरहौजियजुगजसलालस॥जैश्रीभटअघटैनामैंठगौसदामनमोपुं ॥४॥

५८

सदालस ॥ ८ ॥ आभासदोहा ॥ अनायाससहजैअनिहिपाईसुकृतिसमाल
लगलगायजगजिहिंजपेमनवचराधालाल ॥ १ ॥ पदइकताल ॥ मनवचरा
धालालजपेजिनि ॥ अनायाससहजहियाजगमैसकलसुकृतिफललाभसेहीं ॥ तिनि
ऐसे ॥ जपतनपतीरथनेमपुन्यब्रतश्रमसाधनआराधनहीविनि ॥ जैश्रीभटअ
तिउतकटजाकीमहिमाअपरमपारअगमगनि ॥ ६ ॥ आभासदोहा ॥ जहांजुग
लमंगलमईकरतनिरंतरवास ॥ सैंऊंसोसरूपश्रीहरिदाविपिनविलास ॥ पद
सदा

॥वानी॥ कनाल॥ सेऊंश्रीद्वंदाविपिनविलास॥ जहांजुगलमिलिमंगलमूरतिकर

॥५॥ त्तिकरतनिरंतरवास॥ टेक॥ प्रेमप्रवाहरसिकजनप्यारेकवहुंनछांडतपास

कहाकहैंभागिकीश्रीभटराधाकृस्नरसचास॥१०॥ इतिश्रीप्रेमभुवानीजुग

लमनसिद्धांतसप्पदसंपूर्णं॥ अथवनलीलापदलिष्यते॥ रागविभास॥

आभनरोहा॥ कहाकहौमनहस्योहरिललितवजाईभोर॥ श्रवननिसुनि

जागीञरीयामुरलीकीघोर॥ पदतालचंपक श्रवनसुनिजागीरीयामुरलीकी ॥५॥

घोर॥ कहा री करौं मन हस्यौ सांवरे लन लित बजाई भोर॥ टेक॥ रह्यौ न परै चट पटी लागी विन देषें नागर नंद किशो॥ जै श्री भट हहर र ह्यौ न नागरि कौ स्मर निध री हरि और १॥ राग लावल॥ आभास रोहा॥ ननकन धीरज धरि सकै स नि धुनि होन अधी॥ वंशी वन मी लाल की वैंधन कौं मन मीन॥ पद इक लाल॥ वं शी त्रिभंगी लाल की मन मीन की वन सी॥ कहा अंतर घरि ढुरि रहे छुई मृतीघ न सी॥ टेक॥ हारि हे देषा विन क्यौ रहा रहौं धमजन हितन नसी॥ जे श्री भट हरि स

॥वानी॥ बसभईसतजिधु निनेकमनसीमार॥ आभासदोहा॥ कहिजसमातिसौं छाक
॥६॥ दैजाउचली जिहिं औरा कैंसेंहरिदेषैंविनाराषौंरीतनमोर॥ पदइकताल॥
कैसेंहरिदेषैंविनाराषौंतनमोर॥ गोचारनगोपालगएमेरैचितचोर॥ टेक॥
कहिजसमतिसौं छाकदैकवकौभयौ भौंजै श्रीभटहरिदेषनचलीजासौंलं
गिडोरा॥२॥ रागसारंग॥ आभासदोहा॥ हितपकव्यंजनमोदकांमेवामधुररसा प ल
हाथजिमांऊंजौकुंजनिमैंहोऊलाल॥ पदइकताल॥ वैठेलालकुंजनिमैंजौ ॥६॥
पाऊं

न

पाऊं॥ स्यामास्याम भोवनी जोरी अपने हाथ जिमाऊं॥ टेक॥ घृतपक विंजन मोदक मेवा रुचि सौं भोगलगाऊं मधि मिसहित नैवें पिय प्यारी हरषि हरषि गुनगाऊं॥ चंदन चरचि पहुपकी माला निरषि निरषि पहराऊं जै श्रीभट देत पान की बीरी जुगल चरन चित लाऊं॥४॥ राग सारंग॥ आसावरी॥ मेरे मन की अघरनी केतम जानत हार॥ श्रीराधे नंदनंदवलि चरन दियाये चार॥ ९२३

…बलि बलि श्रीराधे नंदनंदना मेरे मन की अमितर्घटना को जानेत्तम

बिना॥टेक॥भलेंईचारुचरनदरसाएठुंहतिपिरीहौंबृंदावनाजैश्रीभटस्याम।
स्यामरूपपैनेवछावरितनमना॥५॥रागसारंगआभासरोहा॥सुघनसौरभ
कमलकरअतिरतिप्यारीपीपा॥वैटेवनिठनिकुंजविविमेवलिहारिजुलीय॥
पद॥रागकलीना॥वैठेकुंजमेंवलिहारी॥नंदकुंवरअलवेलौनागरश्रीवृषभानदुल।
री॥टेक॥सुघनसौरभलियेकमलकेरतिरसप्रीतमप्यारी॥जैश्रीभटगौरस्याव
रसघलविसषीपाववारी॥६॥आभासरोहा॥कुंजमहलसषपुंजमेंभभोजन ॥७॥

रस ५ रू

विविधिरसाल॥श्रीराधासवसभएजेंमनलालगुपाल॥पदइकताल॥मिलिकु
जमहलगोपाललौंप्यारौश्रीराधारसवसजैवैं॥महचरिसौंजरचीसवविधिसो
हरिनैननेहनिधिसौंभेवैं॥टेक॥प्यारीकेनेंननिदेसलेसलषिमुषदेषनगरस
लेवैं॥जैश्रीभटभटूकटाक्षकरनसौजुगलसरूपसधासेवैं॥७॥रागसारंगा॥
आभारोहा॥मैंव्यञ्जगवृषभानुजा॥चहुंदिसिगोपीमाल॥जैजैंकरिकीजि कहि५
पैआरतिश्रीगोपाल॥पदइकताल॥जैजैआरतिश्रीगोपालकी॥आनंदकं

।।वानी।। रसकलसबसागरनवनागरनंदलालकी।।टेक।।सख्यअगवुखभाननाद
।।८।। नीचहूंदिसिगोपीमालकी।।श्रीभटवारवारबलिहारीराधानामनिवालकी
८।।राग।।विहागरौ।।आभासरीहा।।संगरंगीलेगातनकेसंगवरातीग्वालदुलहस
त वि पअनुपहैनिहरतनंदलाल।।पदटेकताल।।चैआलीनित्तविहरतनंदला।
ल।।संगरंगीलेअंगअंगकोमलसंगवरातीग्वाल।।टेक।।दूलहश्रीव्रजरा
जलाडिलीदुलहनिराधाबाल।।जेश्रीभटवल्लवीजुगलकेगावतरसाल।।१ ।।८।।

गीत

दोहा॥संध्यांगौरजउडुनिमैंछबिपावतगोपाल॥श्रीभटभोंटेंमानौव्याहिकेंघरआ
एनंदलाल॥पदरागगौरी॥गोपाललालहूलहग्वालबाली॥गऊवनिआगें
सखिजुत्थमैंराधाहूलहनिलालगवाली॥टेक॥दुंदुभिहूधदुहनिकीवाजीराजी
सबसोभसमजीती॥आरतौपलकनेहजलमोतीश्रीभटरूपपिवाली॥१०॥दोहा॥क
नककटोरेद्वारिनगपगेप्रेमरसजाल॥पेपीवनकेषेलहीदुतषेलदोऊलाल॥पदरा
गकेदारो॥पेपीवनमौंढिंनषेलत॥विलमतलालहैनीकोरूआतिआलवेलकेलकी

नौ ढै

॥वानी॥ रेल॥टेक॥स्यामाकह्यौस्याममसौंनागरहेविरुधकेसौकरमेला जैश्रीभटगोरिकढ्यैरंन
॥८॥ गजवरूपधराह्रूपटभईवहुभेला॥११॥दोहा॥चरनचरनपलकुटकरधरैंकक्षतरंग॥
मुकटचटकछविकिलैंकलग्रिवनैंचलललितत्रिभंग॥पदरागविहागहै॥वनैंवनल
लितत्रिभंगविहारी॥वंसीधुनिमनुवनसीलागीश्रुंखीगोपकुमारी॥टेक॥उ
रधौचारचरनपरऊपरलकुटकक्षनरधारी॥श्रीभटमुकटचटकलटकनिमैं
श्रुटकिरहीपियप्यारी॥१२॥दोहा॥वहुतनरूपधरिहरिप्रियामनरंजनरसहेत ॥८॥

जुगल
मनमथमन मोहनमिथुनमंडलमधिछविदेत॥परइकताल॥मंडलमधिवि
मलँभलसोहैं॥करतविहारविहारीप्यारीमारकोठिमनमोहै॥टेक॥वहुतरूपध
तसवमनरंजनइकप्रतिअंगअनेंनांनासेहैं॥मंडलाकारअपारवदोसषहरिमनमुषसव
कोहैं॥सवनिमानिमनमुदितहियेमेंपिपरसरागअरचयोहै॥दंपतिअंतरमनिग्रीवाभुज
नैन भोहमकुटिथिरकोहेंनैंननमिलिलैनविछेपनरैंनमेंनकिसेंनमिलेंहै॥श्रीमंअरक ८
रहेजिनकेतितनिजनिजलगनिलगोहैं॥१३॥दोहा॥सवमिलिनिरषतनवलछ

॥वानी॥ व्रिंगोपीमंडलाकार॥वीचजुगलसरसावहीं॥अतिरविलसदविहार॥१३॥कमनीता॥

॥१०॥ अतिरूचिपावनमरदविहार॥वीचिजुगलमोहैमनमोहैं गोपीमंडलाकार॥टेक॥

ज षडजेमावैमरसवतावैंसवमिलिजुगलविहार॥श्रीभटनवलनागरीनागरताताथे

ईकारतउचार॥१४॥दोहा॥कीरतिकूषिजकुमुदिनीसकैवासकोजानश्रीभटभोन

कुमारिकोरसवर्ईनएहमान॥१॥पदताल चंपक॥रसवईनयहमानकुवरिको॥कीर

तिकूषिकुमुदिनीजाकीसकैवामकौंजानैंकुवरिकौ॥टेक॥मधुरवस्तुज्यौंघात ॥१०॥

श्रीभटभोनकुमारिकोरसवर्ईनएहमान १

आनितियातरजानिकेमानकियोरसरास ३

निरंतरहोतमहासुषदानकुवरिकैं विचिविचिकटकादिकजैश्रीभटअति
सुषदायकभानकुवरिकैं॥१५॥दोहा॥एकसमैमैंश्रीराधिका[illegible]रूसकांतिपरका
सैंश्रीभटभांनकुमारिकोरसवर्द्धनएहमान॥पदइकताला॥रसिकिनीमानकियौ
रसरास॥एकसमैपियतनमैंअपमानैंनिजप्रतिविंबप्रकास॥टेक॥यहसेभ्रमउप
जायौउरमेंपरतियकोउपास॥जैश्रीभटहटहटहरिसौंनां[illegible]रिरहिनिपटउदास॥१६
[illegible]॥दोहा॥[illegible]निरमदीहैंनैं[illegible]पियतेकौसर्वस

कौतही २

म

दियौकियौमानविधिकौन॥पदनाल्लचंपक॥आनअवसानकछुनहिभा
मिनिकेसैंकीनौं॥नंदलालगोपालनेनेनोहिसर्वसुदीनौं॥टेक॥अवलौंकछु
नदुरावतीकहिकारंगभीनौं॥कह्यौश्रीभटकोमलकुवरिसहचरिसोमीनौं॥१७

म कूलः आभासदोहा॥भामिनिकोमलसेपायनिचलिआयौ॥राधेनेकुनिहारिपि क१८
यकौहियौभायौ॥प्रीतमनंदकिशोरविनाकौनैसचुपायौ॥टेक॥भामिनिकोम
लकमलसेंपायनिचलिआयौ॥जैश्रीभटघूघंनटलनैअवसनेहविकायौ॥१८ ॥११॥

राधेनेकुनिहारिकरिपियकोहियभायौ॥ १८

आभासदोहा॥ मनवचक्रमदुर्गमसदानाहिंवृंचरणछुवान राधे।तेरेप्रेमकी
कांयैंकहिआवतिनहिवात॥पदइकताल॥राधेतेरेप्रेमकीकापैकहिआवै॥
तेरीसीगोपालकीतोपैवनिआवै॥टेक॥मनवचक्रमदुर्गमकिशोरनाहिचरण
छुवावै॥श्रीभटमतिवृषभानजैप्रताछुजनावै॥१९॥आभासदोहा॥स्यामव
तायौनैननमेंरहीसमझिसकुचाय॥वरनलग्योजवकत्यौतवहरषीलालनिहा
रि॥पदइकताल॥राधेतनंदनंदनसौनेहात्नगिरह्यौनैननिमेंस्यामतेरेकाकरि
हा

॥वानी॥ हैदुरिगेह॥टेक॥कुवरिकुवरतोचरनलगिरहेनिरबिरहैविस्देहजावकाऊं प

॥१२॥ कितल्लषिजैश्रीभटभेंटभईकुवरिएहे॥२०॥श्राभासरोहा॥जद्दुजवतीज्योंजि तन

निकरैहैयवडैंतीवाल॥हठनजिसजिपहराऊंगीफ़ूलनकीडरमाल॥परद्दकन

उ ल्ल॥फ़ूलमालडेरमेल्लिहौंचलिश्चल्लकल्लडैंती॥जडुजवतीज्योंजिनिकरौइत्तचि

तेहसैंती॥टेक॥कह्योकहहकोमानियेजिनिहौहवडैंती॥श्रीभटश्रल्लिकल्लस

निकुवरिहरिमिल्लीहठैती॥२१॥श्राभासरोहा॥हियकेहित्तसाधेसवेवांधेल्लय ॥२२॥

आधेजु॥नैंनधरें फलआजहीपायौहरिराधेज॥ परइकताल॥ नेनधरे फल॥
आजहीपायौहरिराधे॥ निरछी चितवनिकान्हकीपरिरूपअगाधे॥ टेक॥ निर
षिनिरषिवीचीञ्कोरहि यकें सिर साधे॥ जेभरल्लषिछुविलीहिलीवाधेंल्लर आधे॥ २२ श्री
आमासदोहा॥ जाकौंनिरषननेंकजवहरयौमानिनीमान॥ मदनसदनजौंजुमें नी४
अषियांस्यामसुजान॥ परकताल॥ मैजीनीजुमदनसदनमोहनजुकी अषियां
निरषतमानहरयौमानिनिकौहारिरहीमकमषियांकोईइकचितवनिछिनेकु

॥वानी॥ बरनतनइनयामनकीलषिगो॥श्रीभटअटकछुदीपटअंतरमंदमंदहसिसषिया॥२३॥
॥१३॥ आभासदोहा॥कुंजमहलदंपतिमिलेभयेमनोरथमोर॥छाईसोनमनायहौंनिरषें
नवलकिशोर॥पदइकताल॥बन्योनीकोराधाकृष्णमिलोंनौ॥दंपतिकुंजमह
लमेराजैमनुकरिआन्योगौनौ॥[illegible]भयेमनोरथमेरेवांछेआछैकरिआईही
सौनौ॥श्रीभटनिरषिहरषेयोहियमेंविहरनलाललैदोनौं॥२४॥आभासदोहा॥तेरी
अरुइनकीजएकमतीसबबात॥हूंनपत्यांऊंवाहुरिहंअबपीईहरियाती॥पद॥ ॥१३॥

ट१ द्यौ॥ या

लाल॥राधे अब पीई हरियतियां।नंदलाल गोपाल की तेरी सब बात इक मनि
यां॥हरि रे घे बिन छिन न रहि परो प्रगट भई हिं नैन जियो का हे श्री भट व हु रिजै॥
हैंठि हौ हैं न आं नि हैं पतिया॥२५॥राग बिलावल॥आधा मदोहा॥रसिक राज
व्रजराज सत अति अलबेलौ लाल॥दान केलि मिस रस चसत श्री भट श्री गोपाल॥
पद इक माल॥रसिक सिरोमनि लाडिलौ मागे गोरस बांह पसारी॥लाल लकुट
आडी दियैं पागे कर कि रुगि हल्लुकारी॥टेक॥नारू परन घसिष अविलोक

करत१

॥बानी॥ तंकहूनपरकासरा॥कहैश्री भटनटवरसलपटप्रियातनहाथनडारी॥१६॥इति

॥१५॥ श्रीश्रीस्वामीजुगलसतवुनलीलासषसंपूर्ण॥अथसेवासखलिष्यतेरागवि

लावल॥दोहा॥मेरेईअगनसेंजपरअरसपरसमकुवार॥करतसहजसषसैंनसैं

स्यामविहार॥पदइकताल॥विभास॥स्यामास्यामसेजउठिवैठेअरसपरसदोऊ

करतसिंगार॥उनपहरीवाकीमोतनमालाउनिपहरयौवाकौनवसरहार॥टेक॥

लटपटपेंचसमारतस्यामाअलकसवारतनंदकुमार॥श्रीभटजुगलकिशोरकी ॥१५॥

जरीमेरेई ऑंगनकरनविहार॥१॥ अभासरोहा॥ घिसिघिसिसिरतैंपरतपटससि
वदनीजुवजालउढतभोरसंगलालकेकसतिकंचुकीवाल॥ पदताल चंपक।
उढतभोरलालजूकेसंगतैंकुंचुकिकसितिराधिकाप्यारी॥ घिसिघिसिपरतनील
पटसिरतैंससिवदनीनवजोवनवारी॥ टेक॥ मनभावतीलाॅगिरधरजूकीरचीवि लघ
धातासरहथसवारी॥ जैश्रीभटसरततंरगभीनेंलषिप्रियाजनकुंजविहारी॥२॥ अ
भासरोहा॥ निरषिहितांई कुनकीहावभावहिंप्यार॥ लजिआरतिवारतिसबै

॥वानी॥ प्रातसुदिनसहचार॥ पदइकताला॥ प्रातसुदिनमिलिमंगलगौंवेलालडैंनी। ८१
॥१५॥ कौसषीलडींवे॥ टेक॥ रहसिज्ञकेलिकहीहियभाइराधामाधवअधि
कहितांई प्रेमसंभ्रमकेवचनसुनावैं॥ सुंदरिहरिमुषदरसनपावैं॥ बालवि
सालकमलदलनैंनी॥ स्यामास्यामपरससुषदैंनी॥ जैजैसुहितालवज
वै॥ गीनवादिसौंचालमिलावैं॥ हियमैंहावभावलिषैंथारा॥ रतिधृतिजोति
रूवातविहारा॥ तनमनमुक्ताचौकपुरावै आरतिश्रीभटअमिटप्रचावै ॥१५॥

३॥आभासदोहा॥कनकआरतीमणिमईअधिककईवनकविधानवारिनिह
रौनैंभरिमुखधरिमैंवापान॥पदद्रुकताल॥मंगलकनकआरतीमणिमयगोर
स्यामछविपरवारौं दोऊवनेनागरीनागरकौंनकीओरनिहारौं॥खंजनमीनच
पलमागरसेमोहननैंन [illegible] देखिहोचारौं॥मैंवापानषवायजैश्रीभटकुरिदेंडो
नचवलैडारौं॥४॥राग [illegible] सारंग॥आभासदोहा॥विनयकरतपाउं
जुगैनादूंचरननिमाण देहभोक्रोपटफलहितजिमाऊंहाथ॥पदद्रुकतालचंपक

॥सानी॥ प्रिलिमोरनन मामामामनकारनकारामाद्रमनरमनतिगोकरौं॥प्रिमकूटनहिनमा

॥१६॥तुं थजिमाऊंइतनौंफलपाऊंदेहधरें॥टेक॥करतविनयनैंननिसौंमोहनआननसु

धाकरपरसहुरोंजैंश्रीभटनेहकीघरीअटपरीसेनवैंननिसैंपैबांपरेंसेंर॥आभासरे

हो॥छपनछतीसौंरसछहौंचतुरविधावहुपुंज॥नंदनदनवृषभानुजाभोजनकर

तनिकुंज॥परइकताल॥भोजनकरतनिकुंजविहारी॥नंदनंदनवृभानननंदि

नीजगवंदनसुषकारी॥टेक॥पायधुवायचिहौंवेनेलौंनेपियप्यारीवेटारी॥आ ॥१६॥

विसर

यधरेसथोरेजगआगरचारुथारभरिंझारी॥१॥लगियजमहचरिसामाउरसनउरौनिर स

सॅतापि॥भक्षअरुम्योउपलेद्यअरुचोष्यचतरविधिसधारी॥२॥भातनबहुभांतिनि सने द्यी

र्धजनगनआनिधेपरसारी॥ओदनमहामोदनपरसीसरसीफूलकालालकौरी॥घी

गायौतायौतननकालीवेलीधस्यौनितारी॥दैघृतडोराबूरापरसीहरषीपरसनहारी॥

४॥तरकनिमरकनिजीरापीरापरमवासनाकारी॥अदुकअनेकप्रकप्रकारदारि

मिआवीनीवउमां॥५॥कहीपकौरीमंजमंगौरीकिरोनिमेनान्यारी॥भाजीमाजीके।

री

तीमेथीचनाल्हनाचौरारी॥६॥मिरत्नेचरविकुलथीवथुवा अथवासवसाकस
वासीकसवी॥सौंजनिफलीकलीकचनारिसोंगरिस्वादषटारी॥७॥आईतरईके
लाकरेलाकट हरवड हरग्वारी॥प्रतिकालीकुंभलरुकचाल्हनवर्लासचमल्लारी
८॥वागनिवनकेसवैवनायेजितेकविजनकीरंगरंगकेजेंवैजवहीनवरीफिरहेपिय ले
प्यारी॥६॥मचकेसिषिरिनरप्रसा छनिषटमग्रधुंगारी॥९॥छुलियामिलनमि
लेजासंगा अंगीषोभ बवारी॥१०॥वहुरिहुपरतीगरतीघीनीपकनी री॥मेदापूप
कीकी सा

गुल्न१ हूंध२

अनूपगुलानवलानंवेलांअंन।प्रचारी॥पूरीकचौरींसमसीराथरमिश्रीककरारी खीर

मोहनभोगमनोहरगटकाअटकांहूथारी॥१२॥चक्काफेंनीरूचनीमाषनशक्करपा

रसहारी॥लड्डियामड्डियाअरसाषाजेगूंजेमगदकसारी॥१३॥सेवदुपरैंदापेडापाप

रवरचेनीरूचिकारी॥गुलापचनसवंचनकुयाशनवेसनचारूवडारी॥१४॥तरनंवाने

कितेरायतेपतेवेंजनवहुतप्रकारी॥कोंजीमांसंदरीफिरिपावैंभावैंभारी॥१५॥पेरासेवजलले

वीषुरमामौनीचूरगुजारी॥वुहाफुलौरेकंदगिरीरैकतीरूवारुचारी॥१६॥रामचनेआ

प

॥वानी॥ चार अवियां कर निवुलहहैं मारी॥ घरैं मरं मुखा अवराचनी। सदमनी अमलारी॥१

॥१८॥ ७॥ सरवत छनाय नाअनवानी मिरचवनि संघारी॥ भोजन छपन छतीसत्त सैं विंन

त्यौं नसवैसथै मजे मारी॥१७॥ हविहरिप्यारी हारिरहे नववनिआई ज्यौं नारी॥ जैथी भट रू

टपरथिरका दीने अचवनपानसपारी॥१८॥ दोहा॥ जोजनगावैं जुगलके आगे॥

यहज्यौं नारा॥ कृपा करैंदो ऊ ल्लाडिलेयहेसत्यनिरधार॥२०॥ आभासदोहा॥ हसत्त

जातजल लेत मुषसेरें वत्तिवितरतष्याल॥ गहिप्यारी करि आचवन करतल्लाडिल्ली॥ ॥१५॥

लाल॥१॥पदइकताला॥ अचवकरतलाडिलीलाल॥ कंचनझारीगहतपरस्पर श्रीरा
धेगोपाल॥जलमुषलेतहिहसतहसावत दिषतसषिनुकेजाल॥राधामाधवबैनरत
भए श्रीभटपरतविचाल॥७॥आभासदोहा॥ लैकरिबीरीपियप्रियाबदनमनोहरदे
नै॥लेनिनाहिजबलाडिलीविनयकरतसषहेत॥पदइकताला॥ प्यारीजूकौबीरीष
वावतमोहनाँ॥टेक॥जदपिनलेतलडैतीकरतैंकरतविनयपँगोहना॥जै श्रीभट
२१ निपँदीनुतनदेष्यौमसकि दियौमुषदोहाना॥८॥आभासदोहा॥मारतैंनजिरनी
पेहरमुवसरव्यौचाहतनरनरनपियमोहना २

लमनुघनचपलासनमान॥अपनेश्रीगोपालकैंप्रियाषवावतपान॥परइकत्ता
ल॥गोपालजूकौपानषवावतिभामिनी॥परमप्रियागुणरूपअगाधाश्रीराधानिज
नामिनी॥टेक॥करअंकमालपीकमुषलसहीविलसहिज्यौंघनदामिनी॥जैश्रीभ
टक्रूटकर्मनवटषिलीसरदमनुज्ञामिनी॥आभासादोहा॥गौरस्याम अतिसोहनी
जोरीपरमउदार॥अलिजनआरतिकरतिहैंछविहिनिहारिनिहारि॥परइकताल
आरतिकरतिआलिछविनिरषैंनवलकिसोरजोरसषवरषैं॥टेक॥प्यारीमुषलसि

कल२ जा

ससिषँन्तन सषा ॥ कान्हर सिर सिषंड मंडित मुष ॥ १ ॥ कुंडल गल कपोल निराजैं ॥ मु
ष सषमा अति ईछन आजै ॥ २ ॥ सीपज सिर उज्जल कै लैं ॥ नील पीत पट घन रुचि
लैयैं ॥ ३ ॥ गौर स्याम मूरति रस रंजै ॥ वाहु विसाल ग्याल ड रंगं जै ॥ ४ ॥ नंद सवन वृष
भान कितनया ॥ जै श्री भर जोर अघर सुर वनया ॥ ५ ॥ आभास दोहा ॥ मधि दिन क
मल नर्रै निसै रची सैन निजहाथ ॥ ललना भावन प्रियारवन मिलि विलसत दोऊ साथ
परसोनाल ॥ ललनाभवन पियारवन संग मिलि विलसन रनिसैं चैंन ॥ मधि दिन पू

हंग

दैखि

॥वानी॥ लैकमलदलनिमौंरचिनिजसकरनिसैंन॥टेक॥सघनविपिनश्रैंनजश्रानद
॥२०॥ कौंदेखिपरतनहिगैंन॥जैश्रीभटदेखिदोऊनतनसनमुफलकरतहैंनैंना॥१॥रा
गकेदारौश्राभासदोहा॥न्यारीधेनुदुहायकेल्याईतटश्रौरापा॥नटौनवल्लिपीवौदे
ऊदुग्धहिमधुरेभाय॥पदइकताल॥पीवौदोऊदुग्धमधुरेभायश्रधिकश्रौटैनानय
नटौंनामैंवामिश्रीमिलाय॥टेक॥कनकजटितसममनिकटोरे॥न्यारीधेंनुदुहाय
वेगिचलौवल्लिकान्हकिशोरीवहुरिजैंसिगाय॥थारघरधरिथ्यारूसमयेरसरमयेरूचि ॥२०॥

है

पाय॥ वेला लै लै पिवै पिवावैं हसैं हसावैं बुलाय॥ पय हि पी वत हित कृत लैं वा दै।

वि लंब लगाय॥ लै हु वीरी कमललोचन जै श्री भट बलि जाय॥१२॥ राग विहाग

रो॥ आभास दोहा॥ मिश्री फेरी जब हितें रही बार बहु हेरि॥ ब्यारू की बेर अहु की

जै ना हि अबेर॥१॥ पद ताल चंपक॥ ब्यारू की बेर अबेर न कीजियै ली जियै जू बलि

जो उथर थोरी कव की बार दिषी नंदन मैं तव हीं तें मिश्री फेरी॥ टेक॥ हठ न करौ वै

ठौ चौकी पै संग लियें राधा गोरी॥ जै श्री भट जु रिवै ▮टे रो रुन न न रिषि जी वैं जोरी॥१३

जगाजीवो

वलि ३

॥वानी॥ श्रा भा स रोहा॥ सो भा निधि सब सिद्धि रिधि राधा धव कौ धाम॥ जहां हित हित सज्या
॥२१॥ सजी श्री भट निज कर स्याम॥ पद ताल॥ चंपक॥ निज कर अपने स्याम समारी॥ सुख
दसेन राधा धव मंदिर सो भा निधि रिधि सिद्धि महारी॥ टेक॥ हित के हेत हरखि संदरव
रस्र तिहि अनूप रची रुची रुचिकारी॥ जै श्री भट करत परिचर्या रिझवन प्राण वल्लभा
प्यारी॥ १४॥ श्रा भा स दोहा॥ मेरे मन के सूफल सब भए मनोरथ पुंज हरि देखौ पौढे रोऊ
मंगल माहि निकुंज॥ १॥ पद ताल चंपक॥ कुंज महल आज मंगल है री॥ किशलयर ॥२१

औ ठेनी लाल रपो ठे हैं गोरी ।२।
मन कि से
लनंदलाल कुसंज्याना ता पर वि छई पीत पिछोरी ॥ टेक ॥ भए मनोरथ मेरे मन के सखि
दंपति पौं ढे इक ठौरी नैनन ओट है श्री भट देषत क्रीडा करत किशोर किशोरी ॥१५॥ अ
भा सरोहा ॥ ढारौं निज कर चवर लै धारौ नैंननि नेहैं सोवत जुगल किशोर जहां सेऊं
चरन सरोरुह ॥ पद इकताल ॥ सोवत जुगल चवर हौं ढारौ । कवहूं सेऊं चरन नैंननि में
नौतन नेह सुधारस धारौं ॥ टेक ॥ कवहूं के परवह्नवरा धा के अपनें नकनी ननसारौं
कवहूंक श्री भट नंदलाल के चरन कमल युच कौं (हि) दे पर ॥ इति श्री आदिवानी जुग

॥बानी॥ लसत तसेवा सुषसंपूर्णा॥२॥ अथ मंसुषल्लिख्यते॥ राग रामकली॥ आभास दोहा॥ अंगअं
॥२२॥ गद्दुति माधुरी विविसुषचंदचकोर॥ श्री भटसुघरदृष्टिन अटके नैनिनटवरनवलकिसो
र॥ पद इकताल॥ वसौ मेरे नैननिमें दोउ चंद॥ गौरवरनवृषभाननंदिनी स्यामवरननंद
नंद॥ टेक॥ गौलकाहेलुभ्यायरूपमैं निरषत आनंदकंद॥ जै श्री भटप्रेमरसवंधनकौ
छुटैहदफंद॥ आभास दोहा॥ जोरी गौरी स्यामको ऊथो री रचिनवनाय॥ पतिविंवितत
नपरस्पर श्रीभटउलटैलषाँ॥ पद इकताल॥ राधामाधावरा जैधामा॥ आसपरसदैसैंप ॥२२॥

तिविंतस्यामस्यामामानैस्यामास्याम॥टेक॥चकितचक्षनिजछविअवलोकत
गौरस्याममिलिभईअरुनाई॥जैसेंमुषआयेदरपरपरनतरतरतिही॥छिनरंगलप
टाई॥अंगनिअंगअंमगरही॥छविछायसमीपमयोजैंजाकी॥जैस्यौंभरनिकेंदेषतिनं ८३
दनेदनवृषभानसुताकी॥२॥रागबिलावल॥आभासदोहा॥प्रेमकलासरसहित॥
पियकहतप्रियासौंवेंन॥हारउदारनिहारिउरचहतचतुरचितलैंन॥पद॥कवाल॥
परस्परनिरषिचकितभएनैनप्रेमकलामासरराधेसौंबोलतअमृतवेंन॥टेक॥होर

॥वानी॥ उदारातिहारनिहारोराधेयहमनलैंन॥श्रीभटलटकज्ञानिहितकारिनिभई।
॥२३॥ स्यामसुषदैंन॥३॥ आभासदोहा॥समनसहितँअमलजामधिनिजप्रतिविंब
देषिदिषावतजमुनातटअतिउतकटअविलंब॥पदत्रिताल॥मंजुकुंजद्ह्
श्री रेप्रियाँतममिलिवैठेजमुनाकेतीर॥गहवरकुसमतरंगसंगसौंसीतलमंदसुगंध
समीर॥टेक॥समनसहितवक्राकृतिआवृतअमृतदेषिदिषावतिनीर॥श्रीभट्
अतिउतटराजैस्यामास्यामछविजलगंभीर॥५॥रागकनडौ॥ आभासदोहा॥ ॥२३॥

सुकर सुकर निरषत दोऊ मुष ससि नैंन चकोर॥ गौर स्याम अभिराम अति छवि
न फवी कछु औरा॥१॥ पद तिताला॥ गौर स्याम अभिराम विराजैं॥ अति उमंग अं
कृ मुकं गअंग भरे रंग स करॅ निषत न हित्याजैं॥ गंडु सौं गंडु बाहु ग्रीवा मिलि प्रति विंवितन
३ न उपमा लाजैं॥ नैंन चकोर विलोकि वदन ससि आनंद सिंधु मगन मए भ्राजैं॥
नील निचोल पीत पट केन ट मोहन सुकर मनोहर राजैं॥ धरा छुराअ षेडुल्ल कोदंड
दोउ तन एक देस छवि छाजैं॥ भावत सहित मिंन लैं गे ति प्यारी मोहन मुष सु ष मुरली

नहा ३

॥वानी॥ सरवाजै॥श्री भट्टअटकिपरेदंपतिदृग मूरतिमन हुएक ही ताजै॥ आसावरी॥

॥२४॥ भुवन चतुर्दस की सबै सुंदरता सिर मौर॥ सुंदरबर जोरी बनी वृंदावन निज ठौर॥ पद

तिताल॥ वृंदावन इक सुंदर जोरी॥ खेलत जहाँ बंसीवट नंदनंदन वृषभान किशोरी॥ नंद

दे की॥ भुवन चतुर्दस की सुंदरता सुंदर स्याम राधिका गोरी॥ जे श्री भट्ट कौं लोगावर हा ४

एकना ५ नैं रमनाँ हि लषकोरी॥ ६॥ आसावरी॥ नषसिषं माके दे उरत नागररस केश सुष

अमृत राधा माधवी जोरी सहैं सदेस तिताल॥ राधा माधव अद्भुत जोरी॥ सदा सनातन ॥२४॥

ंउ वल २

नइकारसविहरतञविचलनवलकिशोरकिशोरी॥ टेका॥ नखसिषसवसुषमार

त्तिनागरभरतरमिकवर्इदैसरोरी॥ जेश्रीभरकटककरकुंडलनैयमिलिलसतहिं॥ लोर २

७॥ आभासरोहा॥ दर्पनमैंप्रतिविंवज्यौंनेनजुनैननिमाहि॥ यौंप्यारीपियपलक

हन्यारेनहिरसांहि॥ परतित्ताल॥ प्यारीतनस्यामस्यामातनप्यारौ॥ प्रतिविंवित

न तनअसपरसरोरुएकपलकदिषियतैंहिन्यारौ॥ टेक॥ ज्यौंदर्पनमैंनैंमहितर

पिरिषवौं॥ श्रीभरजोरकीअतिछविरुपातनमनधननवलावरडारौ॥ ८॥ राग

न रा

नैनैनमेंनेन २

॥वानी॥ यसै॥आभासिह॥।बृंदावनफूलवारीमैंपहरिफूलडरमाला॥विहरतश्रीवृषभा
॥२५॥ नुजानंदनंदनगोपाल॥१॥परतालचंपक॥ नंदनंदनगोपाललालवृषभानदुलारी
विहरतबृंदाविपिनमेंअतिप्रीतमप्यारी॥टेक॥कुसुमपरमपरसपरसंनहोतनैसि
फुल थेफूलनवारी॥जैश्रीभटसुघरीनीमभामिहरिप्रियाउरधारी॥२॥रागकाफी॥आभास
सोहा॥चंचलचिकनेलगौंहैंअरुनवरनरडोरेंन॥अनियारेअतिनागरीनागरकेए
नैन॥परतिताल॥नागरीनागरिकेनैनअनियारे॥अतिअनूपनिजरूपनिहारेपरम ॥२५॥

प्राणप्रियप्रीतमप्यारे॥टेक॥भृकुटिमरोरनिगूढभावसौंडोराकोरप्रेमफंदवा
रो॥अरुणावरनपैंनेरसभीनेंचिकनेलगौहैंप्रीतिपनपारे॥पलककलन्तकमनैं
अनिलनलिनपेप्रातमुदितहितपंचयसारे॥अंजनअमिलरेघईघरलसिवसि
नि नागरीमनोषंजनगारे॥२॥चंचलकमलललितप्रफुल्लितमनुभ्रतलगतनिर
षतरसभारे॥श्रीभटसरतिसमरमेंकोविदसुभटकोटिकेंदर्पईहांवारे॥१०॥श्राम
प्रजेला॥लोचननपापपयीरकेगोचननिरहविशाल॥बिनहीअंजनरौअनोषंज

सदी

॥वानी॥ नलोचनवाला॥पदेखचरीताला॥लहैंतीकेखंजनलोचना।बिनहीअंजनदेख
॥२६॥ विहारीविरहविथातुरमोचना॥टेक॥ चपलचाललालैअवलोकनरूपलुभा
घ संकोचना॥श्रीभटरसरसधीरस्यामकौंकरतनिरंतररोचना॥१॥रागाविलावल
अ।भासरोहा॥मरवसद्वैसरवसदियौलषिपियस्यामसजान॥अंजनषंजननैंन
मनुधरेकटारेसान॥पद२कनाला॥अंजनषंजननैंनमैंलषिनंदढुलारेसाधेरम
वससामरेसर्वसदियौप्यारे॥टेक॥मैनसेनरनकरनकौसानधरेकटारे॥श्रीभटस्याम ॥२६॥

संघेंनकौंस्यामामचिधोशा ५२॥ रागरायसो॥ अथ(भा)सदोहा॥ राधेतेरेरूपकीपटतरक
हियेकाहि॥ सबैसतजिरसबमएनैंनकोंरतनचाहि॥ पदतालचंपक॥ नैंकुनैंन
मोर ३ कीकोरमोहनवसकीनें॥ राधेतेरेरूपकीपटतरकोरीनें॥ टेक॥ कमलकोशत्र
लिज्यौंचलैतारेरंगभीनैं॥ छीमटतनअंजनछुवैलालनलीनें॥ राग[illegible]॥
आभासदोहा॥ जिनजितभोंमिनिपराधरेंनितनितभावनलाल॥ करतपलकनिज
पांमदेहपरिमोहितबाल॥ पद[illegible]॥ प्यारीतूबैं प्यारीहपरिमोहित॥ कारतप

॥बानी॥ लकुपांवडेविहारीधरति[illegible]चरणाभोंमिनिजनैन॥टेक॥यहैप्रीतिपरतीतिनिरंतरदे

॥२७॥ यौवारेसवचित्तवित्त॥जैश्रीभटप्रेमवसप्रीतमनिसवासरजानैंकित॥१४॥राग

केदारौ॥आभासदोहा॥सामरससिसंगलसिप्रियाभरीसरसरसछंद॥डोलतिहै

आज श्रीराधिकाअतिहिंआनंद॥पदतालजौं॥श्रीराधीकाआजआनंदमैंडोलैंसां

वरेचंदगोविंदकेरसभीनैंहूसरीकोकिलांमधुरसैंबोलैं॥टेक॥पहरैंपटनीलवरकं

हारावलीहाथलैयैंआरसीरूपतोलैं॥कहैश्रीभटआजनागरिनीकीवनीक ॥२७॥

की॰ के।

म्मकेसीलगॅग्रंथिषैॅषालैं॥रागकेदारौ॥आभासदोहा॥प्रीतिरीतिरसवसभएजदिपिम

राधे

नोहरमैंन॥तदपिरटैंनिजमुषसदाराधेवैंन॥पदनालचंपक॥मोहनराधेराधे

वस

वैंनवोलैं॥प्रीतिरीतिरसनागरिहरिलियैप्रेमकेमोलैं॥टेक॥हासविलासरास

हा रि

संग राधेंसीलआपनौंतोलैं॥श्रीभटजदिपिमदनमोहनतऊहारीसिरडोलैं॥१॥

रागरायसौ॥आभासदोहा॥गहिमुरलीगोपालकीलीनीप्रियाप्रवीन॥अटकेजं

चतपरस्परहरिवहकरनअधीन॥पदनालचंपक॥मुरैंश्रीगोलकीललनाग

ली पा

॥वानी॥ हिलीनी॥मंजुजुगलअंबुजनिकीपंकनिदुनिहीनी॥टेक॥नीलमनिनकें

॥२८॥ चनषचितरंजितमनुकीनी॥श्रीभटअंचलपरस्परहरिकरतअधीनी॥१७॥रा

गकान्हरो॥आभासदोहा॥चकितनैनलषिवैन भएव्याकुलअतिहीस्यामा॥

हसीसषीकीओटद्वै स्यामासुषधाम॥पदतिताल॥स्यामामदनमोहननेंहरिल की

ईवंशी॥चकितनैननवैननव्याकुलौंषिसषीओटदैहसी॥टेक॥इकसषीनेंननसेंन

समझाएप्यारीपरमप्रसी॥श्रीभटमुकुटलटकचरननितटकरतहैरसिकवंत ॥२८॥

स॥१८॥ अथ भास दोहा॥ विनदाम नित लियो मोल हौं कर हु ज भावै सोइ॥ अहो राधे विनती करौं मुरली दीजै मोहि॥ वर्तिताल॥ राधे विनय करत मोहि मुरली दीजै
विन दाम नि मन मोल लियो हौ जो भावै सो कीजै॥ टेक॥ सयन पान सब सुधि विसरा
ई इन नीकरु गालीजै॥ श्री भट सुघर किशोर किशोरी अस पर सरंग भीजै॥१९
अथ भास दोहा॥ कुहुक काल सजन लाल के ललिता भ्रकुटि चलाय॥ दयेव ताय ज
वला डिली रई माल मन भाय॥ परतिताल॥ कुहुक आल सजन मदन गोपाल॥

॥वानी॥ बृंदावननवकुंजसदनमेविहरतमनरंजननंद[illegible]लाल॥टेक॥भृकुटिचलायव
॥२८॥ नाए[illegible]ललितादेषिदईरयताउरमाल॥श्रीभटसंपटकरिहधिनाचेमुरि
नकिहंनलोचनजुविसाल॥२०॥रागविहागरौ॥आभासदादरा॥कुवरिकि
शोरीनागरीमुहिदीजैनिजहार॥तमकैओरेलीजियेवहहफूलीफूलवार॥पदइ
कताल॥वहफूलीफुलवारियेदीजैनिजहार॥तुम्हैमोतीमालमेहौंलेऊंसरु[illegible]
॥टेक॥कुवरिकिशोरीनागरीसषिऔरसवाशि॥श्रीभटनिपटलहूलष्योक ॥२८॥

हिलेउउतारा॥२१ ७३॥इतिश्रीजगलसतश्रादिवानीसहजसषसमूरो॥ ४

श्राथसरनसषलिष्यते॥रागविहागरो॥ श्राभासदोहा। उरुकतिसहचरिनिर

षिसषहियमें [illegible] भीहुलास नवनिकुंजरसपुंज छविस्यामास्यामनिवा

स॥पदईकताल॥निकुंजमेंपुजसषीनकेतिनमैंस्यामौंविराजै सीतलमंदसुग साभ

धत्रिविधिमारुतसेवतरिनराजै॥टेक॥ उरुकतजितितलितासषिरसषि हियेंहु

लासीमाजै श्रेनरश्रेनरागश्रौनरंपतिश्रीभरहिषीभएसर्वकाजै॥ श्राभासदोहा॥ व

फूमत्तियाफूल्यौ॥विपिनरत्तियां॥सरदसुहात॥वत्तियां॥भावत्तिवारनउरछत्तियां॥अंष
ल्लिषात॥परताल्लचंपके॥दोउमिल्लिकरत्तभोवत्तीवत्तियां॥मदनगपालकुवरिरा
धेकेनषमनिअंकल्लिषतउरछत्तियां॥टेक॥तसियैछिटकरहीउजियारीपूरन
चंदसरदकीरत्तियां॥केल्लिरूपिनीजमुना॥श्रीभरहुंसावनफूल्यौवहुभत्तियां॥व्र
श्रीभामसरोहा॥कवहुंल्लैंनिजकरनमैंल्लावत्तनैंनविसल्ला॥प्रानप्रियामनहरनकेचर
नपलोटत्तल्लाल॥परइकत्ताल्ल॥प्यारीजूकेचरनपलोटत्तमोहन॥नीलकमलकेद ॥३०॥

लनिलयेरेअरुणाकमलदलमोहन॥टेक॥कबहुकलैलैनेनलगावतअलिधा
वतज्यौंगोहनैंजैश्रीभटछबीलीराधेहोतजगेतेछोहन॥३॥आभासदोहा॥प्यारी
प्रीतमपरस्परसच्यौरंगअनुराग॥अधरसधारसदेतहैंलेतस्यामबड़भाग॥परइकता
ल॥श्रीवृंदाविपनेश्वरीरससिंधुविहारी॥रच्यौपरस्परप्रेमछेमवाढ्यौअतिभारीटेक
अरप्यौपियहियपायकेनिजअधरसधारी॥श्रीभटबड़भागीगोपालपियेरुचिकारी
॥४॥आभासदोहा॥छिनवावरिविनकुंजमेंराधामाधवकेलि॥श्रीभटनिरटहिनका

॥वानी॥ रिसा॥हरा षहरा षरसरा ला॥१॥पद इकतालचंपक॥ रसकी रेलि वेलि अति वाढी रूप

॥३१॥ निकी हित वाव रि विहस निरहौ सदा मेरे चित चाढी॥ टेक॥ निरषत रहौं निपट हित

नी कारिं पिय प्यारन की गुन गति गाढी॥ जै श्री भट उनकर संघर सषके लि सहेलि निरंत

र ठाढी॥५॥ राग केदारो॥ आभास दोहा॥ वाहु वाल वर लाल की किय कंदुक हिय हेत

घनस्याम लके हेत मनु दामिनि सी छवि देत॥ पद तितालो॥ कीनें सउ स्याम स्यामा सैंनें

ऐसें लसैं अंग राग को विरद वदन ई षर वैंन॥ टेक॥ वा लला लवाहु कंदुक किये दियें ॥३१॥

हियेहेत॥स्यामघनतनदामिनीवनिभामिनी छबिदेत॥गो विंददयितासरतसनि

तश्रीभटपटसंभीर॥प्रियाफबीमनकोरससिकीदवीघनगंभीर॥६॥रागमारू॥श्रा

भासदोहा॥दोउनद्दृगमृगराजैज्यौंगतिगतिमतिरहेभूलि॥श्रीभटवरवदेहैलदुनि

रषतआनंदमू॥पद॥कनाल॥प्रियामुषसषमादेषिकैंमोहेकुंजविहारी॥अ

धरमधुरपारीकलीकमीकसीसधमी॥टेक॥प्रणायकोपिद्दगरोपिकैंकोरसौंनिह

री॥श्रीभटघटनादेषिकैंजाऊंवलिवलिहारी॥७॥आभासदोहा॥अ होराधेहुषभा

जै

नकी॥कुवरि किशोरीवाल॥ थोरीवैभोरी॥हिमेमोहेमोहनलाल॥१॥पदइन
ताल॥जैजैश्रीवृषभानकिशोरी॥गंजतरसिकछेकछेकितसीलसीस्यामसंग
गोरी॥टेक॥जैजैराधेरूपअगाधेचितैचारुचितचोरी॥श्रीभटनटवररूपसेरव
रमोहतैंथोरीवैभोरी॥८१॥इतिश्रीआदिवाणीजुगलसतमतसुरतसंपूर्ण॥४॥
अथआदिवाणीजुगलमतउछाहसषत॥अथवसंतउत्सवराग वसंत॥आ
भासदोहा॥मंगलविमलीसवहिमिलिषेलोहियेहुलसंत॥मानविरहदुषमेटनै॥

भयौहि२

आयौरितुराजवसंत॥मानविरहदुषमे॥पदइकताल॥आयौरितुराजवसंतहि
तैंयौकौ॥अवमिलिमंगलविमलीषेलौमानविरहगयौजियकौचितमेंचाहु
उछाहवढायौसहजसंगभयौपियकौ॥श्रीभटकूटकोपकरिनागरिदीपज
रायौधियकौ॥आभासदोहा॥नवकिशोरनैवनागरीनवसवसैंजमुनाजनव
वृंदावननवकुसमनवसंतरितुराज॥पदइकताल॥नवलवसंतनवलवृंदा
वनवननवलहिफूलेफूल॥नवलहिकान्हनवलसवगोपीनिर्तैनएकैतूल

॥वान॥ टेक॥नवलहिसा॥षिजवा॥दिकुमकुमानवलहिवसनअमूल॥नवलहिछीप
॥३३॥ वनीकेसरिकीमेटतमनमथसूल॥२॥नवलगुंल्लालउडैरंगकूंकानवलपव
नकेफूल॥नवलहिवाजेवाजनश्रीभटकालिंदीकेकूल॥३॥५३॥आमासदो
हा हरष्यौमनव्रजराजकौनिरषिवसंतरितराज॥श्रीभटहटककछुनहिक
रिहेमनकेकाज॥पदइकताला॥आजुमनकारजकरियैरी॥हरष्यौमनब्रजपति
कोअनिहीलषिचषिठा॥रियैरी॥टेक॥रितकौराजवसंतनिरषिसोईसषउरधरि ॥३३॥

येरी॥ श्री भट्ट हरू टकनहीं श्रवननकहूं महां मृदै भरियैरी॥ ३॥ श्रथ होरी राग वसं
त॥ आभामसेहू॥ विविधिभांतिमवसौंजमजिमृषद्मरोवरिरूप॥ होहो होरी षेलैंहीं
स्यामास्यामअनूं॥ पद्रूकत्ताल॥ होहो होरी षेलैंस्यामास्यामसषिरूपसरोवरा गु
त्रलिले - गाके ग्राम टेक॥ जहांकुवेरि आईचलिपेंजा॥ छायमिलेमोहननिंकुं जा॥ साधे भुजा तहा
पसारिगुलालमेलि॥ वनीघनसहेतमानौंनड्तिकेलि॥ ॥ रंगठारिकमोरीरूमवि
फिंव॥ नीलांवरमानौचपला विंवा॥ भरिचरच्यौरंगगोकुलसचंद॥ कारभनिसके

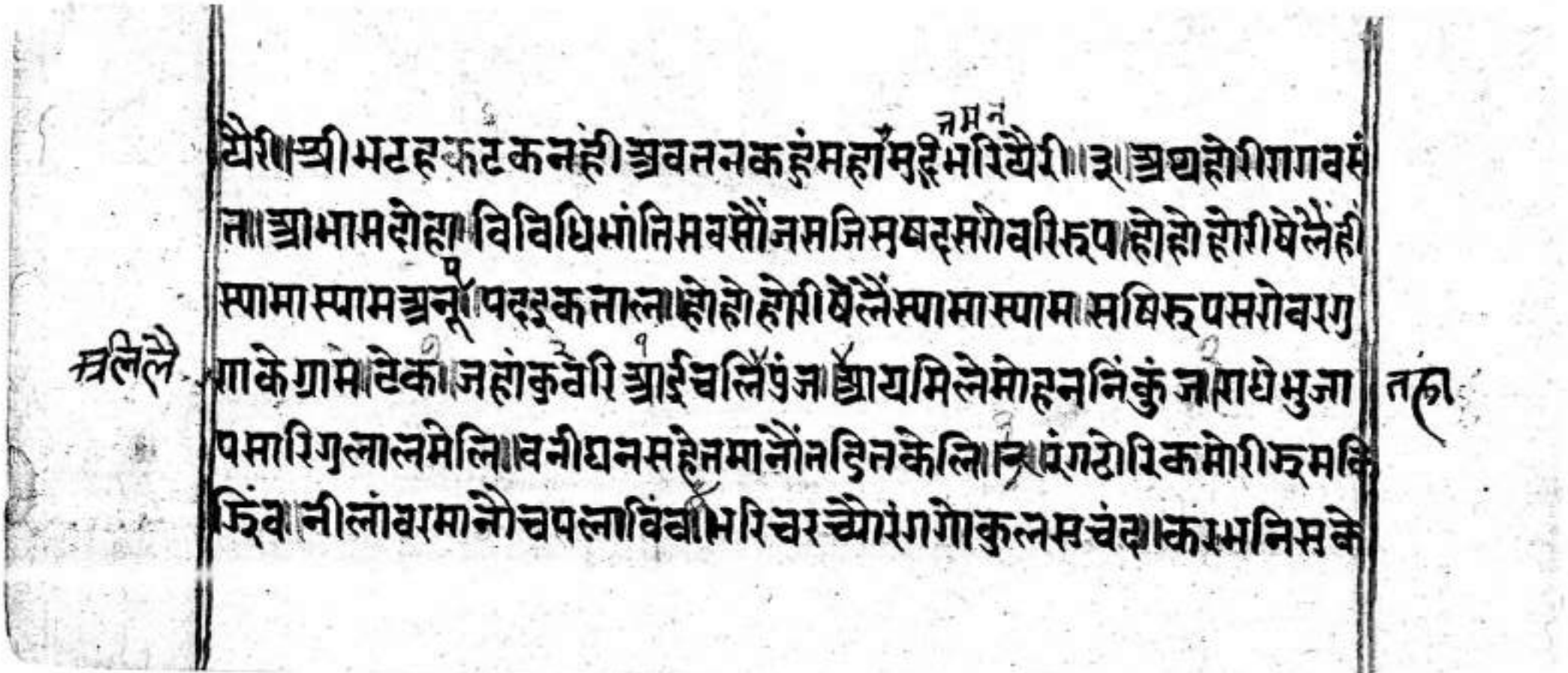

॥वानी॥ लिमनुमदगयंदा॥३॥रंगभीजिचीरलगेअंगअंगलखिनंदनंदनमनभयौपं
॥३४॥ गावृषभानकुवरिडारसौअबीरामर्कतमनिमानैंसींच्यौषीर॥४॥नवलरंगबू
कोंहिंयौगुलाल॥वैसंधंजबैमानौचंदमालगारीगावैगोपीपीसुखवेंन सो लदी
इसनतस्यामजूकेहियमेंचैन॥५॥पिचकारीभरिगंराधेओर॥छविपरवारौंवा
जन्यकोरि सौरभसगंधकेसरिकैंनी॥६॥आनंदकंदमलयेसमीर॥७॥वनमालि
वल्लवीनुगहेओंमनौकेटिनडितघनलपटीजाय॥सखिलेहुरियाकौंभलें ॥३३॥

नचाइ॥ फेरिनहिंनपायहैं॥३॥सोरठा॥ ॥ देषीकमोरी स्यामादईसिषायमुषलेपन करिदीये छुटायासवहसीललसीकरदैयनाला॥ कहिंऊं चेसुरहारेगपाला॥७॥ हरिवी चनस्योमच्यौकीचंग॥ सरमैज्योंमेघपैसोमसंग॥ प्यारीचंदुमुख॥ निनेंषेहरिच कोर॥ देविकनकमोरिनिमधिमनहुमोर॥ प्रारंगडारिगारिदैभगे॥ जुमाला॥ सुस मांनसमरजैसेंपरतचाला॥ फिरिलईगुपालयिचकारीहाथ॥ घनतेंवनिकसिज्यों तडितजात॥८॥ वरंभ्रमरवृजराजलाॅ॥ फूलीकमुदिनिंसोनेगोपवाला॥ वहुव

भूमत

॥वानी॥ काउड्यौरंगअंगथउथा॥ नहौअष्टव्यौआयगोपिनकौसू थ्यां॥ पिफिरिकरिगोधालग
॥३५॥ लालनपेला॥ करिलयौबरावरिविहरि षेलव्रजराजकुंवरसौषेलैंफागफूलीकुमु
दिनीज्यौहरिपरागा॥१॥ नितअभंगकेलिहितहिमेंरागा॥ कहैंकमलासीएधनिस।
हाग॥ फागषेलिचलीगावनजवाद॥ देषतश्रीभटकेसौप्रसाद॥ अथजुगलके।
लिरागसारंग॥ आभासदोहा॥ नरनहथारनप्रियाकौसिषवतपियसषसारारचि
लीलाहचिकारिनीषेलहिवारविहा॥ पदइकताला॥ षेलैंवारविहारविहारनी॥ ॥३५॥

रचिरंज्यनमंजनमिसलीलाऽरसिकलाऽरसिकलालरूचिकारिनी टेक जमुनां
तरंगारहमिसमइरनअंगअंसकहारनी श्रीभट नटनागरीप्यारीकौसिषवतनरनहथ
पधनी ॥ ५ ॥ आभासदोहा ॥ मिलतकलिकाकमलकीफेलनरूकिरसफेलि राजत
अतिजलजानपैकरतजुगलकेलि ॥ पदइकताल ॥ जलकेलिकरतरसकेंदिनी ॥ राज
मानजलजानऊपरदोऊकाऽभानकीनंदिनी ॥ टेक ॥ कलिकानवलकमलकी
मिलतफेलतसरससुगंधिनी ॥ श्रीभटजानेकैंनरसिकदोऊ ॰ डारतनेहरसफंदि

॥वानी॥ नी॥ अथवरषारितु॥ रागमलार॥ आभासदोहा॥ सो गावै [illegible] कुंजन गावै मैंनमनौज

॥३६॥ भीजनकवदूनि [illegible] गनितै दैषै॥ जुगलकिसोर॥ पदइकताल॥ भीजनकवदेषौं इनि

नरी३ नैंना॥ स्यामाजूकी सुरंग चूनरी [illegible] मोहनकौ उपरैना॥ टेक॥ जुगलकिसोर कुंज

तर ठाढे जतन कियौ कछु मैं ना॥ उमगी घटा चहूं दिसि श्री भटजरि आई जल

सैंना॥७॥ आभासदोहा॥ वसन भीजि हैं भामिनी छिनकनिवारौ मेह॥ मोहि सहित

लायकतमहि छुनाह मारौ एह॥ पदइकताल॥ श्री राधेजू संदर छुनाह मारौ मोहि॥ ॥३६॥

सहितलाय कवहिं छिनाह मारौ ॥ परइकताल ॥ श्रीराधे जू सुंदर छिनाह मारौ ॥
मोहित श्री स्यामा लायक वनयौ वनक विचारौ ॥ टेक ॥ भीजे गेंजु वसन तन भामिनि
छिन इक मेह निवारौ ॥ श्री भट हठन कियौ हित जान्यौ आनि गरौ हिय प्यारौ ॥
आभास रोहा ॥ जमुना जल मै निरखि हीं फु कि चंचल निजरुहांहि ॥ दोऊ जन ढा
ढ़ेल परिडर एक हि सुहियामाहि ॥ १ ॥ परइकताल ॥ ढाढे दोऊ एक ही सुहिया मां हि
वंशी वट तट जमुना ल मे निरषत चंचल रुहांहीं ॥ टेक ॥ कारी कमरि या श्रीतरंपनि

॥वानी॥ स्यामा स्याम लपटाहीं॥ श्रीभट कल्प कूट में कंचन जल्ल वरषत जल्ल काहीं॥९६ ९०॥
॥३७॥ आभास रोहा॥ ज्यों ज्यों चूनरि सैंवगैं ज्यों ज्यों लावन हीया॥ भीजत कुंजनि तें दोऊ आ
वत प्यारी पीया॥ पट स्कन लाल॥ भीजत कुंजनि तें दोऊ आवत॥ ज्यों ज्यों बूंद परत चून
रि पर त्यों त्यों हरि उर लावत॥ टेक॥ अति गंभिर झीने मेघन की द्रुमन र छिन विरमा
त बाजे श्री भट रसिक रस लंपट हिलि हिय सचु पावत॥ अथ हिंडोरा आभास रोहा।
व टिज टिहुहु चौरें सैं झतन घन दामिनि में ॥ फूलै फवे उरझै हीला हिली लाल्त ॥३७॥

शुरि दोउ दुर्ग श्रोरे दे ख॰ खंभ आधार

हिंडोरा पद २ कल्याण ॥ झूलत नवला डिली लाल हिंडोरैं ॥ झूलत बैठे अंग अंग नि अरि दृष्ट
वटिक डोर अमोल्ल कन वलपाट कीडोरें ॥ जामें नवल किशोर किशोरी अपनी अ
पनी छोरें ॥ कारी घटा घट निके डोरा मोरा बोलत मोरें ॥ कोकिला कल जल कन वरष
त थिरगं भीर घन घोरे ॥ १ ॥ सवै अ्रास संदर तें मंदर वनी सषिन कि औरें ॥ देषि दंपति झूल
८३ लत फूले रामिनि घनभोरें ॥ सनमुष बैठे उमे कूवरि हहरि गावें सषी सरथोरें ॥ स्यामा स्या
म सषी सकारी झूलत संजोग झकोरें ॥ २ ॥ जिन तिन झूलत डुल्लन तिन ही तिनसषी
हे

॥वानी॥

॥३८॥

भुज

द्रगनिकोंमोरैं॥ तनमनदेतनमयभईस्यतनामोदर।चितचोरें।रजगहेंलहें।चित्तइच्छु
तरती।असिततनगोरैं॥ श्रीभटवंशीवटतटनिरषतठगिरहरषहिलोरैं॥११॥ आभा
रोहा॥ जमुनावंशीवटनिकटहरनहिंडोरेहीं। रयासंगरदेव्यादिफूलावहीफूलनप्या
रीपीय॥ पदइकताला॥ हिंडोरेफूलनहैंपियप्यारी। श्रीरंगदेविसदेविसाषाफेरायरे वि ४
नललितनारी॥ टेक॥ श्रीजमुनावंशीवटकेतटसुभगभूमिहरियारी॥ नेसियेदादुर
मोरकरतरतधुनिसनिमनहरततमारी॥ घनगरजनदामिनितेडरपिपियहियलपटी ॥३८॥

सकमारी॥ जै श्रीभटनिरषिरंपतिछविदेतश्रपनयौवारी॥१२॥ श्रथपादेत्रा
रागमल्ला२॥ श्राभासरोहा॥ काहूप्रांनकेत्रानहितजसमतिगरगवुलाय॥ कहौ
पवित्रदामरच्छिमहरावहुरिषिराय॥ पदइकताल॥ पवित्रापहिरेकुवरकन्हाई
श्रतिश्रभिरामदाममनोंदामिनिघनस्यामैंपराई॥ टेक॥ पवित्रेसकेप्रानत्रानहि
तजानिजतनजसमाई॥ भक्तिभावमनमानमहितजवलीनैंगरगवुलाई॥ तुमह
मरेघरकेजपिरोहितलगोंतिहारेपाई॥ इहवालकचमकैनचपलतेसोइकरोउ

॥वानी॥ पंडुत्तामनसकलम ह्रएकादसिगेपनिलेसवआईपोलेगरगपिचारिनंचरु
॥३४। मसुनौंभलैंनेदगाई पंचरंगरामरचावौनानारतनलगाई। आगमनिगममंत्रसों
नीकेरष्याकरीवनाई। सुनैंवचनआचारजकेब्रजराजसोईकरवाई। मंत्रपवित्रा
८ रामस्यामगो उरगाउ ई पहराई। मानोंघनथिरकीनोदामिनिसोभालगतिसुहाई।बा
ढ्यौमंगलसवब्रजपुरमैंश्रीभट मईमनभाई।१३। अथश्रीलालजूकीवधाई
लिष्यते। आभासरोहा। भागवतीजसमत्तीअतिभइप्रफुलितलषिलालगो ॥३४।

कुलमंगल आज सषि वसौ विसद विसा(ले) राग मलार । पद ॥ तिताल ॥ गोकुलमंग
लमैजिव धाई रानी जसमति कें प्रगटे है संदर कुंवर कन्हाई । टेक ॥ (गा) पीओ पीथा रलि
छवि३ येंकर रविरे षिलज्याई । गावति धावति अनि छवि पावत सरति लगनि सुहाई । रे
षि रेषि मुषस्याम संदर को अंग अंग सचुपाई । भागवती जसमति रानी अति सत
जायौ सषसाई । निर्तत कीरति सुषिया निजुम षक हि कहि वहुत वडाई । वृजरा
नी मन भानी तेमैं जो जैसै मन भाई । नेह मदन मेंटु पहरी कीमची की चम्रे कारे १८

॥बानी॥ गोपीगोपग्वालगनअंनअंआनंदमगनमहाई॥भागसंहतव्रजरानिकैभाष
॥४०॥ तभूपमलइ॥कहतआजुहमव्रजवासिनिकीसकलआसपूरवाई॥जगवंदन
नंदनं नंदजायोसषछायो॥व्रजआई॥जैश्रीभटरसिकभक्तनिकभक्तनिमनभईमहा
मुदिताई॥१४॥श्रीलडिलीजूकीवधाई॥रागमल्लार॥आभासदोहा॥व्रजजनगोपी
गोपगननंदादिकमनमोद॥सुनतजनमराधाचलेमिलिवंसानकोद॥पदइक
ताल॥आजव्रजमिलिमंगलगावै॥गोपिगोपभागकीरतिकेगायगायप्रगटावैं॥ ॥८१॥

टिक॥प्रगटीश्रीराधारूप॥अगाधासबसखीयांनामैंमिलिआयेनंदादिकसबही
थिमपर्सस्यभावैं॥कोईकगावैकाईवजावैकोईरहीलेधूावै॥आयआपसंसानेंवीथि
नजैंजैकारकरावैं॥१॥भाजननंदसोंमिलेधायकैंअंसौंअंकलगावैं॥श्रीभटनि
करनिहारिराधीकास्यामानैंनसचुयावैं॥१॥अथगान्सब॥रागकेदारो॥आ
भासरोहा॥मोहैंलालवनमालपैमधुकारकरतगुंजार॥श्रीभटल्लटकसवासन
अटकेनंदकुमार॥चर्चरीताल्लजाशा॥राजईसमाजआमधुपजौंमकुंरचंदउघन

॥बानी॥ गुणजड्डनसंहरीसनेनहूंदपदेखौ॥जेहितफरिनमणिधरासरोसरविविधिहु
॥४१॥ मंचकावरचलितगगावल्लवीकुचचकवाकविहंगद्वंद्व॥गोपीमंडलकलमा
लधमलषलितनेसिवालनालजानिवयसमानननसपानस्वेदविंद॥हेक
नवलवालेकाअनूपलावनिगुनस्वरूपदलविकासविमलत्तासुंसहूप्रेमना
सगंरागंभीरधीरगानगुंजभ्रमननिर्त्तकरनमेजुतानमनिलैनेसरसस्रूष
स्रूधासछंदा॥चीरपुडनिकसमस्याम॥शं गनैवैंजेनिशामजगलमिलनि ॥४२॥

घटकचलनिस्रुफर्नविग्रासकंदश्वेदप्रागपतितपंकउन्नताहरिचंदनटंक
जातजत्लसजीवगहनफूलमात्तवेलिवंदा॥अकरिनकानुगाकरनतूलवह
त्लकंटसीमफूलजलजहमेत्लवीचवेत्लराजसिंहूरफूत्लकसंदमधुरदमकरंदञ
धाकेसरिश्रानंदकंदजैथीभटत्लपरानिरूचिरनीलांवरगीतफंद॥१२६॥श्रीभामरोह
करवाञ्चवजकेदभुजभारकतकनकस्थूलाश्रीभटरसमयतरसमतेधामनश्रनूकूल॥१२
दकताल॥फूलीकुमुदिनिमारदसहाईजमुनातीरधीरदेमदेॐविहरतकमलनो

नीलवरनस्यामारुचिकीनीअरूनवरनताहरिमनभाई १ २५

लेनीलपीतकरमाई॥टेक॥श्रीभटलपटिरहेअंसनिकरमनोंमरकतकंजरा
ई॥अथब्याहोत्सव॥राग मारू रोहा॥वेरीपुलिनविराजहीमंडपवेलितमाल
नच्यौकिधौं[illegible]पहरच्यौंब्याहविहारिलाल॥पहूरकताल॥श्रीव्रजराजकें जुवराजमानौरे
ब्याहहेरावनरच्यौ पुलिनवेरीविराजैंदंपतिरेषिमनसच्यौ॥टेक॥द्वैपरोहि
तरितरिचाउचारतेवेलितमालमंडलबच्यौ॥जेश्रीभटभावरिपरतनटवरअं
कमालप्रियासंगनच्यौ॥१८॥अथ भामरे रोहा॥जिहिछिनकीवलिजाउंसषी॥५१॥

छिति हि छिन भावरि लेन लाल बिहारी सांवरे गौरे गौर विहैरि निहेत १ रा गबिहागगौनालचंप १

पस्यौ जै मिथैयै विहरि निगौर विहारीलाल सावेरे जिहि छिन की वल्लि जाउं सषीरी पर तिही छिन

भावरे ।टेक। कंचन मनी मर्कत मनि प्रगटी वरसानैं नंदगावरे विधिना रचि तन होई जैश्री भट

राधामोहन नावरे ।१९।१००। इति श्री आदिवानि जुगल सत उछाह सष संपूर्ण अथ फलस्

तिरोहा ।श्री भट प्रगट जुगल सत पैं कंठ तिह काल जुगल के लि अवलोकतैं मिथैं सिधै ट

जे जाल ।१। छप्पै इक रोहर आदि अंत मधिमा निसत पर आभास निस हित जग सहद परि ल

वाना। छप्पै रूप रसिक सव संत जन आनमोदन याकी करो रसपर है सिधांत विसषट खुजली

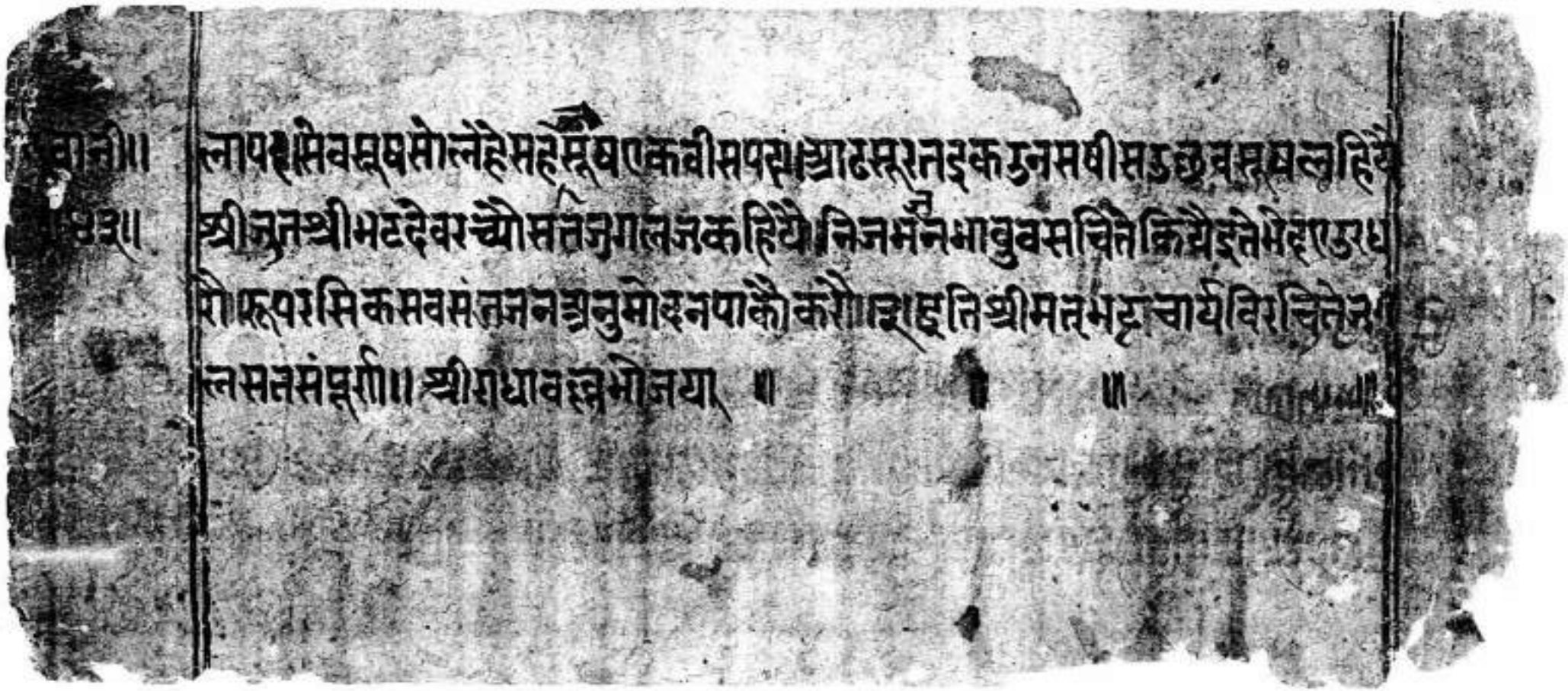

…ती॥ लापक्ष्मेवसप्षमोल्नेहेमहेस्त्रैषएकवीसपक्षआठसरतइकतनसषीसडछुत्रसषल्लहियैं
४३॥ श्रीजुतश्रीभटदेवरच्योसततजुगलजकहियै निजमैनभावुवसचिंतेकियैइतेमेदएउरध
रौ रूपरसिकसवसंतजननअनुमोदनपाकैकरौ ॥१॥ इति श्रीमतभट्टाचार्यविरचितेज
लसतसंपूर्णा ॥ श्रीराधावल्लभोजया ॥ ॥ ॥

॥श्रीहरिप्रियायै नमः॥ अथ अष्ट
काल सेवा सुख सूचनिका लिष्यते
॥दोहा॥ जै जै श्री हित सहचरी नरी
प्रेम रस रंग॥ प्यारी प्रीतम कैं सदा रह
त जु अनुदिन संग॥१॥ अष्ट काल बे
नेन करौं तिन की कृपा मनाय॥ से
वा सुख संछेप करि सूचनिका सम
झाय॥२॥ जुगल सतोतर अबन सुनि
जगे जुगल जगजोति॥ आलस बस
रस बस विवस अंग अंग अंग संग हो
ति॥३॥ आये मंगल कुंज मैं सुख सो
धन सुख सांनि॥ मंगल जोगल गाय
कैं आरति कीनी आंनि॥४॥ कौन कुं
ज मैं कौन की साजि सौंज सहचारि॥
अंक बाये रुचि कुंज कौं निज सुख
नैंन निहारि॥५॥ पहिराये पट पौंछि
अंग रंग रंग रुचि अनुसार॥ करन सिं

॥श्रीमते निंबादित्याय नमः॥ श्रीरा
धा गोकुलचंद्रौ जयतः॥ अथ आदि
बाणी श्री जुगल सत लिष्यते॥ छ
प्पय॥ कल्प विटप श्री नट प्रग
कलि कल्मष दूरि कर॥ जे
नर आवै सरन ता पत्रय तिन की
हरहीं॥ नंद दरसी जे होय हस्त
ज्ञीमल कधरहीं॥ गुन निधि रसि
क प्रवीन निकिट सधा कौ आग
र राधा कृष्ण स्वरूप ललित लीला
रससागर॥ कृपा दृष्टि संतनि सुष
देन कृपद द्विजवंस वर॥ कल्प
विटप श्री नट प्रगट कलि कल्म
षउष दूरि करौं॥१॥ अथ आदि बा
णी श्री जुगल सत लिष्यते तत्र प्रथ

सिः
१

म सिधां॥ अथ ठाकुरपद श्रीनासजुत
लिख्यते॥ रागकेदारो॥ आनास
दोहा॥ चरणकमलकौ दीजियै
सवास हजार साल॥ घर जायौ
मोहि जांनि कै चेरौ मदन गोपा
ल॥१॥ पद॥ इकताल॥ मदनगो
पाल सरन तेरी आयौ॥ चरनकम
ल की सेवा दीजै चेरौ करि राखौ
घरजायौ॥ टेक॥ धनि धनि मात
पिता सुत बंधू धनि जननी जिनि
गोद खिलायौ॥ धनि धनि चरण
चलै तीरथ कौं धनि गुर जिनि ह
रिनाम सुनायौ॥ जे नर बिमुख
भये गोविंद सौं जनम अनेक म
हा दुख पायौ॥ श्रीभट के प्रभु दियौ

आनैंपद जम डरप्यौ जब दास क
हायौ॥२॥ आनास दोहा॥ रागकेदा
रौ॥ स्यामां स्याम सरूप सरपरिखा
रथ विसरयौ जु॥ जाकौ मन आनं
द घन वृंदा विपिन हरयौ जु॥१॥
पद॥ इकताल॥ जाकौ मन वृंदा वि
पिन हरयौ॥ स्यामा स्याम सरूप सरो
वर परिखा रथ विसरयौ॥ निरखि
नि कुंज पुंज छवि राधे कृस्न नाम
उर धरयौ॥ श्रीभट राधे रसिकरा
य ताहि सर्वस दै निबरयौ॥३॥
राग केदारौ॥ आ॰ दो॰॥ जाकौ ना
म हि लेत सनंदे तजुगल निजकूल
॥ जै जै वृंदा बन तु है महा आनंद कौ
मूल॥१॥ पद॥ चौताल॥ जैजै वृंदा
वन आनंद मूल॥ नाम लेत पावत

मि॰
२

जुगनयर तिजुगलकिसोर दे न
निजकूल ॥ टेक ॥ सरने आय पा
ये राधाधव मिटी अनेक जनम
की सूल ॥ औसें जो निहंदावन श्री
नटरज परवारि कोटि मख तूल
॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ श्री॰ दो॰
॥ मोहन ब्रज बनन्ह मिस ब मो
हन सहज समाज ॥ मोहन जमु
नाकुंज जहां बिहरत है ब्रजराज
॥ पद ॥ इकताल ॥ ब्रजनेन्ह मि
मोहनी मैं जांनी ॥ मोहन कुंज मो
हन ब्रंदाबन मोहन जमुना पांनी
॥ टेक ॥ मोहन नारि सकल गो
कुलकी बोलत मोहन बांनी ॥ श्री
नटके प्रभु मोहन नागर मोहन
राधा रांनी ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ श्री॰ २

दोहा ॥ सेव्य हमारै हैं सदा ब्रंदा बि
पिन बिलास ॥ नंदनंद वृषभानजु
जा चरन अनन्य उपास ॥ १ ॥ प
द ॥ इकताल ॥ संतौ सेव्य हमारे
श्री प्रिया प्यारे ब्रंदा बिपिन बिला
सी ॥ नंदनंदन वृषभांननंदनी च
रन अनन्य उपासी ॥ टेक ॥ मत्त
प्रनय बस सदा एकरस बिबिध
निकुंज निवासी ॥ जै श्री नटजु
ग बंसी बट सेवन सूरति सब सु
ष रासी ॥ ५ ॥ पद ॥ राग केदारो ॥ श्री
दो॰ ॥ आनक है आनैं न उर ह
रि गुर सौं रति होइ ॥ सुष निधि स्या
मा स्याम के पद पावैं न लसोइ ॥
॥ पद ॥ तिताल ॥ स्यामा स्याम पद

सि॰
३

पावैसोई॥मनवचक्रमकरिसदा
निरंतरहरिगुरुपदपंकजरति
होई॥टेक॥नंदसुवनहेमजोन
सुतापदजजैतजैमनआनैजोई
॥श्रीनटअटकरहेस्वांमीपन॥
आंनकहैमानैसबकोई॥२॥६
॥रागकेदारौ॥श्री॥दोग॥जन
मजनमजिनकैसदाहमचाके
रनिसभोर॥त्रिनबनपोषनसु
धाकरठाकुरजुगलकिसोर॥
रकता ॥पद॥जुगलकिसोरहमारै
ठाकुर॥सदासरबदाहमजिन
केहैंजनमजनमघरजायेचाके
र॥टेक॥चूकपरैपरहरैनके
वहीसवहीभांतिदयाकेआके ३

र॥जैश्रीनटहअगटत्रिनबनमैंप्र॥
गतनपोषनपर्मसुधाकर॥३॥
७॥रागकेदारौ॥श्री॥दोग॥मन
सुहालमैंटरौअरुनियसुपरौज
सजाल॥आलसउपजौआंनसौं
लालसपदजुगलाल॥१॥पद॥
दकौंल॥निसदिनलगियरहौय॥ ना
हिलालस॥स्यामास्यामचरनकी
सेवाबिनांआंनसौंउपजौआल॥
स॥टेक॥कहतसुनायसुमनव
चक्रमकरि॥उरफिरहौजिय॥
जुगजसबालस॥जैश्रीनटहअ
घटघटनामैंटरौसदामनमोर
सुटालस॥१॥८॥रागकेदारौ॥श्री
॥दोग॥अनायासमहजैंजुलिहिं
पाईसुकृतसुमाल॥लगलगायजग

सि० जिहिंजपेमनवचराधीलाल॥३
४ ॥पद॥इकताला॥मनवचराधी
लालजपेजिनि॥औनायासस
हजहिंयाजगमैंसकलसुकृत
फललाजलल्यौतिनि॥टेक॥
जपतपतीरथनेमपुन्यव्रतसु
नसाधनआराधेनहींतिनि॥जै
श्रीनटअतिउतकटजाकीम
हिमाअपरंपारअगमगिनि
॥२॥६॥रागकेदारौ॥आ०दो०
जहांजुगलमंगलमईकरत
निरंतरबास॥सेऊंसोसुषरू
पश्रीबृंदाविपिनविलास॥१॥
ता पद॥इकतालौ॥सेऊंश्रीबृंदाविपि
नविलास॥जहांजुगलमिलिमं
गलमूरतिकरतनिरंतरबास॥ ४

टेक॥प्रेमप्रबाहरसिकजनप्यारे
कबहुंनछाडतपास॥कहाक
हौंभागकीश्रीनटराधाहरसरस
बास॥३॥७॥ ॥इतिश्रीश्री
हिवाणीजुगलसतसिद्धांतसुष
पदद्वैसंपूर्णं॥ ॥अथव्र
जलीलापदलिष्यते॥रागविला
स॥आ०दो०॥कहाकरौंमनह
रयौहरिललितबजाईजोर॥अ
वनिसुनिजागीआरीयामुरली
कलघोर॥पद॥तालचपक॥अ
वनसुनिजागीरीयामुरलीकीघोर
॥कहारीकरौंमनहरयौसांवरैल
लितबजाईजोर॥टेक॥रह्यौन
परैचटपटीलगीबिनदेषैंनागर

श्रृ: नंद किसोर॥ जैश्री भट हरि नर
५ त्यौ नागरि कौ सुरति धरी हरि श्री
र॥ ५॥ २॥ राग बिलावल॥ श्री० ॥
दोहा। तन कन धीरज धरि सकै ^
सु निधि निहोतु अधीन॥ वेसी व
नसी लाल की वेधन कौं मन मी
न॥ १॥ पद॥ इक ताल॥ वेसी टेने
^मन गी लाल की मुरति की बनसी॥ कह
अंतर घरि कुरि रहे छबि मूरति घ
नसी॥ टेक॥ हरि दे बैं बिन क्यौं र
^उ हौं धीरें नहिं तन नसी॥ जैश्री भट
हरि रस वस भई सु निधि निनैं
क नैनसी॥ ५॥ ३॥ राग बिलावल
॥ श्री० दोहा॥ कहि जसुमति सौं छो
क दै जां तें चली जिहिं ओर॥ कैसें ५

हरि दे षैं बिनां स खौं री तन मोर॥ १॥
पद॥ इक ताल॥ कैसें हरि दे षैं बि
नां रा षौं तन मोर॥ गो चारन गोपा
ल गये मेरौ चित चोर॥ टेक॥ क
हि जसुमति सौं छाक दै कव कौ
भयौ भोर॥ जैश्री भट हरि दे षन
चली जा सौं लगि डोर॥ ६॥ श्री॥ रा
ग सारंग॥ श्री० दोहा॥ छुतप क
बिंजन मोद कामे बाम धरें रसा
ल॥ हाथ जिमां उँ पां उँ जौ कें ज
नि मैं दोउ लाल॥ १॥ पद॥ इक
ताल॥ बैठे लाल कें जनि मैं जो मां
कें॥ स्यौ मा स्यां भुभावती जोरी श्रे
पनै हाथ जिमां कें॥ टेक॥ छुतप
क बिंजन मोदक मेवा रुचि सौं

श्रीः नोग लगो ऊं ॥ सषिन सहित जैबैं
६ पिय प्यारी हरषि हरषि गुन गो
ऊं ॥ ३ ॥ चंदन चरचि पऊ पकी मा
ला निरखि निरखि पहिरों ऊं ॥ जै
श्रीनटदैत पांनकी बीरी जुगल
चरन चितलों ऊं ॥ ३ ॥ ४ ॥ सारंग
आश्रा दोश्र ॥ मेरे मन की अघट
५न नाके तुम जांनें हार ॥ श्री राधे नं
दनंद बलि चरन दिषाये चारु
॥ ३ ॥ पद ॥ इकताल ॥ बलि ब
लि राधे श्रीनंदनंदनो ॥ मेरे मन
की अमित अघटना को जानें
तुम बिनो ॥ टेक ॥ लेई चारु
चरन दरसाये ढूंढति फिरी हौं
बृंदाबनो ॥ जै श्रीनटस्यामा स्या ६

म रूप पैं न्यवछावरि तन मनों ॥ ४ ॥
५ ॥ सारंग ॥ श्राश्रा दोश्र ॥ करन
कमल संघत सुरलि अलि रति
प्यारी पीय ॥ बैठे बनिठनि ऊंज
विचि मैं बलिहारि तुलीय ॥ ६ ॥
पद ॥ इकताल ॥ बैठे ऊंज मैं ब
लिहारी ॥ नंद ऊं वर अलबेलौ
नागर श्रीहषभांन दुलारी ॥ टे
क ॥ करन कमल सुरली संघ
अतिरति रस प्रीतम प्यारी ॥ जै
श्रीनटहरगउ रसी बरसुषल षिसवि
यांस वबारी ॥ ६ ॥ ७ ॥ सारंग ॥ श्र
श्रा दोश्र ॥ ऊंज महल सुषपुंज मैं
भोजन बिबिध रसाल ॥ श्री राधा
रस बस भये जैंवत लाल गुपाल

व्रं०
७

॥११॥पद॥तिताल॥मिलिकैंजम
हलगोपाललाल प्यारौ श्रीराधार
सबमजेवैं॥सहचरिसौंजरची
सवविधिसौंहरिनैंननेहनिधिसौं
नेवैं॥टेक॥प्यारीकेनैंननिदेस
लेसलषिमुषदेषतगरसालेनैं
॥जैश्रीनटनट्टकटाछिकरन
सौंजुगलसरूपसुधासेवैं॥१॥
॥१॥सारंग॥श्रीं॥रोग॥सबअंग
रूपलानुजोचकुंदिसिगोपीमा
ल॥जैजैकहिकरकीजियैंआ
रतिश्रीगोपाल॥१॥पद॥कंकल
ला॥जैजैआरतीश्रीगोपालकी
॥आनंदकंदसकलसुषलाग
रनवनागरनंदलालकी॥टेक ७

सबअंगरूपलानुनंदनीचकुंदि
सिगोपीमालकी॥श्रीनटवारबा
रबलिहारीराधानामनिवालकी॥
॥१॥रागबिहागरौ॥श्रीं॥रोग॥रं
गरंगीलेंगातकेसंगबरातीग्वाल
॥दूलहरूपअनूपकैनितिबिह
रतनंदलाल॥१॥पद॥जयश्रीली
लितिबिहरतनंदलाल॥रंगरंगी
लेअंगअंगकोमलसंगबराती
ग्वाल॥टेक॥दूलहश्रीब्रजराज
लाडिलौदुलहनिराधाबाल॥जै
श्रीनटवरबीजुगलके॥गावतमं
गलगान॥११॥रागगोरी॥श्री॥
रो॥सब्यागोरजउडनिमैंछवि
पावतगोपाल॥श्रीनटमानौंआ
हिकैंघरआयेनंदलाल॥१॥पद

श्री ९ इकतालु॥ गोपाल लाल हंसि हंसि बा
८ ढुबराती॥ म उवनि आवौ सखि
नकै घराधी उल हवि नि लाल गावा
ती॥ टेक॥ डुंडु निहुं थ उहि ने कौ
बानी राजी सब गोप सजाती॥ श्री
रतौ पलक नेह जल मोती॥ श्री वि
ट रूप पिवानी॥५॥ केदारौ॥
आस्थाई॥ कनक कटौरै डारि न
ग धगे श्रम रस जाल॥ पैपी वत कै
चेल ही हत प्रेल दौ उ लाल॥५॥
पद॥ इकताल॥ पैपी वत मांगी है
न घेल॥ विलसत लाल लडैनी॥
दोऊ श्रति श्रलबेल केल कौरे
ला॥ टेक॥ स्याम कू त्यौ स्याम सौ
नागर देषि हध कै सो कर मेल॥
तै श्री नट डारि कटौरै न गज बऊ ८

षटा ऊपट मई बकू ऊंलन॥४॥
गमा विलोयगौ॥ आस्थाई॥ चरन
चरन पर लकूट कर धरै कदोत
ररंग॥ मुकट चटक छवि लटक
कल छिव नैन लललित त्रिभंग॥
६॥ पद॥ इकताल॥ वनै वन ललि
त त्रिभंग विहारी॥ वंसी धुनि मनु
वन सी लागी आई गोप कुमारी
॥ टेक॥ अरस्यो चारु चरन पद ऊ
पर लकूट कदो तर धारी॥ श्री लट
मुकट चटक लटक नि मैं अट
किर ही प्रिया प्यारी॥४॥ राग विहा
गरौ॥ आस्थाई॥ बकुत रूप धरि
हरि प्रिया मन रंजन रस हेत॥ मन
मथ मन मोहन मिथुन मंडलम
धिह विदेत॥५॥ पद॥ इकताल॥

श्री ५

मंडलमधिविमलजुगलजनऊसो
हैं॥करतविहारविहारीप्यारीर
तिमारकोटिमनमोहैं॥टेक॥व
ऊतरूपधूतसवमनरंजनइक
प्रतिअंगनादोहैं॥मंडलाका
रअपारवडौसुषहरिसनमुषस
वकोहैं॥१॥सवनिमांनिमनमु
दितहियेमैंपियरसरासरओ
हैं॥दंपतिअंतरसजियोवोउ
जनौंहिन्हऊटिथरकोहैं॥२॥
नैंननैंनमिलिलेनविछुपनमैं
नकिसैंनमिलौहैं॥श्रीभटअ
दकिरहेजितकेतितनिजनि
जजनमनिलगोहैं॥३॥२३॥रागवि
हांगरौ॥आरोता॥सवमिलिनि
रषतनवलछविगोपीमंडलाका ४

र॥वीचजुगलसरसोवहीअतिअ
रुचिसरदविहार॥१॥पद॥इ
कताल॥अतिरुचिपावतसरद
विहार॥वीचजुगलसोहेमनमो
हेगोपीमंडलाकार॥टेक॥म
डलजमावैसरसवनावैसवमि
लिजुगलनिहार॥श्रीभटनवल
नागरीनागरनाताथेईकरतउ
चार॥२॥२४॥रागविहांगरो॥आ
रोता॥कीरतिकूषजुकुमदनीस
कैवासकौजांन॥श्रीभटमोनकुं
मारिकौरसवर्द्धनयहमांन॥१॥पद
॥चपककताल॥रसवर्द्धनयहमां
नकुंवरिकौ।कीरतिकूषकुम
दनीजाकीसषैवासकौजांनिकुं
वरिकौ॥टेक॥मक्षरबस्तजोपा

ननिरंतर होत महा सुख दान ऊँक
रि को॥ विविवि चिकडुकादिक
जैश्री नटश्रति रुचिदायक नी न
ऊँवरि को॥२॥२४॥ विहागरो॥
आ०दो०॥ एकसमै श्रीराधिका
कुंस्म कोति परकासि॥ आंनत्रि
यातटजांनिकैं मांन कियोरसरासि
॥१॥ पद॥ इकताल॥ रसकिनी मां
न कियोरसरासि॥ एकसमैं पिय
तन मैं अपनौं निज प्रति बिंव प्र
कासि॥ टेक॥ यह संभ्रम उपजा
यो उर मैं परतिय कौ ऊपासि॥
जैश्री नटहटहरिसौं करिरहीना
गरि निपट उदासि॥१॥२६॥ विहा
गरो॥ आ०दो०॥ नांमनिजोतु सु
नी वकी कछु गति समझी हैन॥ १०

पियतौ कौंसर्वस दियौ कियौ मां
न विधि कौंन॥१॥ पद॥ चंपक
ताल॥ मांन अवसांन कछूनहिं
नांम नि कै सैं कीनौं॥ नंदलाल
गोपालनें तोहि सर्वसुदीनौं॥ टे
क॥ अवलौं कछु नउरावती क
हि कारंग लीनौं॥ कह्यौ श्रीनट
कौमल ऊँवरि सहचरि सौं मीनौं
॥१॥२७॥ विहागरो॥ आ०दो०॥ मा
मनि कौमल कमलसे पायनि च
लि आयो जु॥ राधेनैंक निहारि क
रि पिय कौ हियना यौ जु॥१॥ पद॥
इकताल॥ राधेनैंक निहारि क
रि पिय कौ हियना यौ॥ प्रीतम नं
द किसोर विनां कौनें सचु पायौ

ब्र०
११

टेक॥नामनिकोमलकमलसे
पायनिचलिआयौ॥जैश्रीनट
घूंघटतटलसैवसुनेहविको
यौ॥१॥१८॥विहागरौ॥आ०दो०
॥मनबचक्रमदुर्गमसदाताहि
बचरनछुवात॥राधेतेरेप्रेम
कीकहिआवतनहिंवात॥१
॥पद॥इकताल॥राधेतेरेप्रेम
कीकापैंकहिआवै॥तेरीसो॥
गोपालकीतोपैंवनिआवै॥
टेक॥मनबचक्रमदुर्गमकि
सोरताहिचरननिछुवै॥श्री
नटमतिहमनाउजेउप्रती
पजनावै॥१॥१९॥विहागरौ॥
आ०दो०॥स्यामवतायोनैनमैं ११

रहीसमझिमुकुंवारि॥चरनल
ग्यौजबकबौतबहरषीलालनि
हारि॥१॥पद॥इकताल॥राधे
नंदनंदनसौंनेह॥लसिरथौनैं
ननमैंस्यामतेरेकहाकरिहैउ
रिगेह॥टेक॥कुँवरिकुँवरतो
चरनलागिरहेनिरषिरूपदेषि
सुदेह॥जावकअंकितलषि
जैश्रीनटनईकुँवरिहरिप्रेह॥
॥१॥२०॥विहागरौ॥आ०दो०॥ज
डउवतीस्यौंजिनकरैहोयवडै
तीवाल॥छतजिसजिपहिरांउं
गीफूलनकीउरमाल॥१॥पद॥
इकताल॥फूलमालउरमेलिहौं
चलिअलकलडैती॥जडउव

शृं॰ १२ नीज्यौंजिनकरौइतनीचितैहसै
नी॥टेक॥कह्यौकाहूकौमा
नियैंजिनहोऊवडेनी॥श्रीनट
अलिकलमुनिकुंवरिहरि
मिलीहहैंनी॥१॥२१॥विहांग
सो॥आ॰दो॰॥हियकेहितसा
धेसवैवांधेलटआधेजु॥नैंनध
रेंफलआजहीपायोहरिराधेजु
॥१॥पद॥इकताला॥नैंनधरेंफ
लआजहीपायौहरिराधे॥ति
रछीचितवनिकांककीपरिहि
पआगाधे॥टेक॥निरखिनिरखि
वीचीऊकौरहियकेहितसाधे॥
जैश्रीनटलखिछविलाडिली॥
वांधेलटआधे॥१॥२२॥विहांग॰ १२

आ॰दो॰॥जाकौंनिरखतनैंकन
वहस्यौमाननीमांन॥मदनसद
नजांनीजुमैंअंपियांस्यामसुजांन
॥१॥पद॥इकताला॥मैंजांनीजू
जांनीमदनसदनमोहनजूकौअं
पियां॥निरखतमांनहस्यौमान
निकौहारिरहीसवसखियां॥
टेक॥कोईइकचितवनिचितै
ऊंवरतनइनयामनेकीलपि
यां॥श्रीनटअटकछुदीपटअं
तरमंदमंदहसिमुखियां॥१॥२३॥
विहांगरौ॥आ॰दो॰॥ऊजमह
लदंपतिमिलेभयेमनोरथमोर
॥आईसौंनमनाइहौंनिरखौनव
लकिसोर॥१॥पद॥इकताला॥व
न्यौनीकौराधाकेसमिलौंनौं॥

अ०
१३

दंपतिकुंजमहलमैंराजैमनौं।
करिअन्योंगोंनौं॥टेक॥नये
मनोरथमेरेवांछेआछेंकरिआ
ईहीसोंनौं॥श्रीनटनिरषिहर
षलयेहियमैंविहरतलालनदौं
नौं॥१॥२४॥विहागरो॥आ०दो०
॥तेरीअरुहनकीजुएएकम
तीसबबात॥हंनपसांऊंवऊ
रिहठअबपाईहरिघात॥१॥
॥पद॥इकताला॥राधेअबपा
ईहरिघतियां॥नंदलालगोपा
लकीतेरीसबबातैंइकमति
यां॥टेक॥हरिदेषेंबिनछिन
नरहिपरोअगटभईहितजेति
यां॥काहेश्रीनटवकरिजोंहछि
तोहौंनआनिहौंपतियां॥१॥२५॥

१३

रागविलावल॥आ०दो०॥रसिक
राजब्रजराजसुतअतिअलबे।
लौलाल॥दानकेलिमिसरसच
सलश्रीनटअगोपाल॥१॥पद
॥इकताला॥रसिकसिरोमनि
लाडिलौमांगेगोरसबांहपसा
रै॥लालकटिआडीदियैं
प्यारौकरिकरिबौहोलडकार
री॥टेक॥तरऊपरनैघासिघूंअ
वलोकतकरतवऊनपरकार
री॥कहैश्रीनटनटवररसलंप
टत्रियाननहाथनडारी॥१॥
२६॥ ॥इतिश्रीब्रजसुख
संपूर्णं॥ ॥अथसेवासुख
लिष्यते॥रागविलास॥आ०दो०

से॰ मेरेई आंगन सेज पर आरस प
१४ रस सुकुँवार ॥ करत सहज सु
षसौंस नैं स्यामा स्याम विहार ॥
१॥ पद ॥ इकताला ॥ स्यामा स्या
म सेज उठि बैठे आरस परस दो
ऊ करत सिंगार ॥ उन पहरी मो
तिन की माला उन पहर्यो बा^
कौ नौ सर हार ॥ टेक ॥ लटपटे
पेच सँवारत स्यामा अलक सँवा
रत नंद कुँवार ॥ श्रीनट जुगल
किसोर की जूटी मेरेई आंगन क
रत विहार ॥ ५॥१॥ विभास ॥ श्री
दो॰ ॥ षिसि षिसि सिरतैं पर
त पटससिवदनी उर जाल ॥
उठत जोर सँग लाल कै कसत १४

कंचुकी वाल ॥ १॥ पद ॥ चपकता
ल ॥ उठत जोर लाल जू कै संग नैं
कंचुकि कसत राधिका प्यारी ॥
षिसि षिसि परत नील पट सिर^
तैं ससिवदनी नवजोबनवारी ॥ टेक
॥ मनभावती लाल गिरधर जू की र
ची विधाता सुहथ सँवारी ॥ जै श्रीन
ट सुरत रँग जीनैं लषे प्रिया जुत कुँ
ज विहारी ॥ १॥ ५॥ जैसें ॥ आन्दो॰ ^ विभा
कनक आरती मनि मई अधिक
ई बनक विधान ॥ वारि निहारौं नैं
नन रिसु षधरि मे बाथान ॥ १ ॥ पद
चपकताल ॥ मंगल कनक आरती
मनि मय गउर स्याम छवि ऊपर वा
रौं ॥ दोऊ बनैं नागरी नागर कौं नं^
कौंन की ओर निहारौं ॥ टेक ॥ पंज

से० नमीनचपलसारँगसेमोहननैंन
१५ देषिहौंवासौं॥मेवापानषबाय
जैश्रीनटकरिदंडौतचैंवरलै
ढारौं॥१॥३॥रागसारंग॥श्री०दो०
२॥विनयकरतपांऊंतुमैनांऊं
चरननिमाथा॥देहधरैंकौएहफ
फलहितजिमांऊंहाथा॥१॥पद
चपकताल॥मिलिजोजनस्यामः
स्यामकरतकरगरसहसतरस
वतियांकरैं॥पीयकहतहितु
हाथजिमांऊंहतनौंऊंफलपां
ऊंदेहधरैं॥टेक॥करतविनैं
नैंननिसौंमोहनआननसुधाक
रपरसडरैं॥जैश्रीनटनेहकौघ
टौअटपटीसैंनवैंनसौंपैपाप
रैं॥२॥७॥रागसारंग॥श्री०दो० १५

रूपनछूतीसौंरसछकेहौंचतुरवि
धावकूँकुंज॥नंदनंदनवृषभानु
जाजोजनकरतनिकुंज॥१॥पद॥
इकताल॥जोजनकरतनिकुंज
विहारी॥नंदनंदनवृषभाननंद
नीजगवंदनसुखकारी॥टेक॥षा
यधावायविछैनैंलोनैंपियप्यारी
वैठारी॥आयधरेसुथरेसुगआ
गरचारुथारभरिझारी॥१॥लगि
यसुसहचरिसांमांपुरसनचुरस
निरसविसतारी॥नष्मअरुजोस
लेस्सअरुचोष्यचतुरविधिसनि
धिसुधारी॥२॥जालवकुनमोनि
नव्यंजनगनऔनिधरेपरसारी॥
औदनमहामोदनपरसीसरसीफु

खे॰ १६

लका खलकारी॥ घी मायौ तायौ
ततकाली मेलीघ स्यौ नित्तारी
॥ दैछतडोरा बूरा परसी हरषी
परसन हारी॥४॥ तरकनमरक
नजीरा पीरा परमवासना कारी
॥ अद्रक अनेकप्र कारिदारि
मैं औं वीनी वुंचुसारी॥५॥ कढी
पकौरी मूंग मुगौरी कियेनिमौं
नान्पारी॥ नाजी साजी केनीमेथी
चनां लुनां चौंरारी॥६॥ मिरचिचे
रचिऊलथी वथवा अथवासव
सा कसैं वारी॥ सौंजनिफली कै
ली कचनारी सो गरिस्वाद्घटारी
॥७॥ अरई तुरई केला करेलाक
टहरवटहरग्बारी॥ ग्रतिकाली १६

कूँनलरुकचालूनवे नौरसचैंव
नारी॥८॥ बागनवनकेसवैवृना
ये जितेकविंजनकारी॥ रंगरंगे
जैं वैंनवहीनवरीफिरहेपिय
प्यारी॥ घुलियामिलनमिलेजा
नंगाअंगामोनपुनारी॥९॥ वऊ
रिउपरतीगरनीघीकीनीकीमा
कनिकारी॥ मैदाहूप अनेंपयु
लगुलानवलां अन्नप्रचारी॥
पुरीकचोरी घीरसुसीराघरमि
श्री ककरारी॥ मोहनभोगमनो
हरगुटका अटका दूधउधारी
॥१०॥ चबका फैंनी स्तचनी मोघन
सक्कर पारसुहारी॥ लडियामडि
या अदरसा बाजेगुनेमग दकसा
री॥११॥ सेवउपरेठा पेठा पापर

से०
१७
वरषचटनी कविकारी ॥ गुनापच
नसब वचनकटा छिन वेसन
चारू वक्षरी ॥ १४ ॥ तरतुंवाते
वितेरायतेपतेवेकूतपरका
री ॥ कोजीसाजी सुंदर फिरि फि
५ मौचे रि पावै नारी ॥ १५ ॥ पेरासेव जले
वी पुरमामोती चूरगुजारी ॥ खु
हा फुलोरे कंदगिंदौरे तुक्कतीरु
वारू चारी ॥ १६ ॥ रामचनै औ
चार अवियाकैर निंबुलहसा
री ॥ घिरमरमुरबा औ बरापत्व
नीरसदमनी अमलारी ॥ १७ ॥
सरवत छुनां पनां अनवांनी
पिरच वनी लुपधारी ॥ नोज
न छपन छतीसों बिंजनसवै
सजेल्यौ नारी ॥ १८ ॥ हाँ हि हरिप्या १७

री हा पिरहेतबवनि आइल्यौ नारी
॥ जैश्री नटफटपट छिरकादी
नैं अचवन पानसुपारी ॥ १९ ॥ दो
हा ॥ जोजन गांव हिंगुगलकै आ
गैं यह ल्यौनार ॥ कृपा करैं दो उ
लाडिले इहै सम निरधार ॥ २० ॥
१ ॥ सारंग ॥ आ ॥ दो ॥ हसतजा
तजललेत मुषरसवेतवितरतप्या
ला ॥ गहिझारी करिआचमन कर
तलाडिलीलाल ॥ ॥ पद्मा इकेत
ला ॥ अचवन करत लाडिलीला
ला ॥ कंचन झारी गहहपरसपर
श्री राधे गोपाला ॥ टेक ॥ जलमु
ष लेतहिं हसत हसावत दिख
तसखिन केजीला ॥ राधामाधव
खेलन रतनये श्री नटपरत विचा

से॰ ॥७॥४॥ सारंग ॥ आ॰ दो॰ ॥ लै
१८ करवीरी प्रिय प्रिया बदन मनो
हर देन ॥ लेत नांहिं जवल डि
लौ बिनय करत सुष हेत ॥१॥
पद ॥ इकताल ॥ प्यारीजू कौ बी
री षवावत मोहनां ॥ सुंदर मुष सु
ष देष्यौ चाहत नंदनंदन प्रिय
सोहनां ॥ टेक ॥ जदपि न लेत
लडैती करतैं करत बिनै पा
रि गोहनां ॥ जै श्रीभट निपट
दीन लैन देष्यौ मुसकि दियौ
मुष दोहनां ॥१॥७॥ सारंग ॥
आ॰ दो॰ ॥ सरद रैनि गिरनी ल
मनु घन न्वे पलौ सुनमांन ॥ श्री
पनैं श्रीगोपाल कौ प्रिया षवा
वत पांन ॥१॥ पद ॥ इकताल ॥

गोपालजू कौ पांन षवावत भामि
नी ॥ परम प्रिया गुन रूप आगा
धा श्रीराधा निजनामिनी ॥ टेक
॥ कर ऐंक माल पीक मुष लसे
हीं बिलसहिं ज्यौं घन दामिनी ॥
जै श्रीभट कूट मर्कन तट षि
ली सरद मनुजामिनी ॥१॥८॥
सारंग ॥ आ॰ दो॰ ॥ गउर स्याम सु
अति सोहनी जोरी परम उदार
॥ अलिजन आरति करति है
छवि हिं निहारि निहारि ॥१॥
पद ॥ इकताल ॥ आरति करत
ति आलि छवि निरषैं ॥ नवल
किसोर जो रसु बरषैं ॥ टेक ॥
प्यारी मुष लसि ससि षंडित सुष

से॰
१९

॥ काकर सिर सिषंड मंडित मु
ष॥ कुंडल जुगल कपोल निराजै
॥ सुषमा अति ईछवि न आजै॥
२॥ सीपज सिर उज्जल कल कैलै
॥ नील पीत पट घन रूचि पेलै॥३
॥ गौर स्याम मूरति रस रंजै॥ बा
ऊ बिसाल माल उरगंजै॥४॥
नुंद सुवन हेष भांन कितनया
॥ जैश्री भट्ट अघट सुछि वनया
॥ पद॥ ५॥ सारंग॥ ओं दो॥ म
धिदिन कमल निदलन सौं रची
सैंन निजहाथ॥ ललतान वन त्रि
यार वन मिलि विलसत दो उसा
थ॥ ८॥ पद॥ चौताली॥ ललतान व
न त्रियार वन संग मिलि विलस १९

त रुचि सौं चैंन॥ मधिदिन फूले
कमल दलन सौं रचि निज सुक
र निसैंन॥ टेक॥ सघन विपिन
ऐंन जु आनंद कौ देषि परत न
हिं गैंन॥ जैश्री भट्ट देषि देषि दो
उ नैनन सफल करत हौं नैंन
॥ ९॥ ६॥ राग गौडी॥ ओं दो॥
निरषि हिताई ऊ कुंनकी हा बना
व हियप्यार॥ सजि आरति वार
ति सबै सांझ मुदित सहचारि॥ १
॥ पद॥ इकताला॥ सांझ मुदित
मिलि मंगल गावै॥ लाल लडैती
कौं सषी लडावै॥ टेक॥ रूसि
जुकेलि कही हियमाई॥ राधा
माधव अधिक हिताई॥ प्रेम
संभ्रम के वचन सुनावै॥ सुंदरि

से॰ २॰ हरिमुषद्रसनपावै॥२॥वाल
विसालकमलदलनैंनी॥स्या
मास्यामपरमसुषदैंनी॥३॥जै
जैसुरकरितालवजावै॥गीतवा
दिसौंचालमिलावै॥४॥हियमैं
हावभावलियैंधारा॥रतिघन
जोतिरुचातिविहारा॥५॥नैं
नमनमुक्ताचौकपुरावै॥आर
तिश्रीनटअमिटचावै॥६॥
२॥रागकेदारौ॥श्री॰दो॰॥न्या
रीधेनुदुहाइकैंस्याईतटश्रीदा
म॥नटौनवलिपीवोदोउदुग्ध
हिमधफेलाय॥१॥पदो॥इकला
॥पीवैदोउदुग्धमधफेरैला॥
य॥अधिकश्रीश्रीनटनदौ
नौमेवामिश्रीमिलाय॥टेक॥ २॰

कनकजटितसुमनिकटौरैस्या
रीधेनदुहाय॥वेगिचलौवलि
कांकुकिसोरीवकुरिजैहैंसि
राय॥१॥धारधरधरिआरुस
मयेरसरमयेरुचिपाय॥वेला
लैलैपिवैपिवावैहसैहसावै
बुलाय॥२॥पयहिपावतहि
तुकेतहलवाव्रोविलवल
गाय॥लेकुवीरीकमललोच
नजैश्रीनटवलिजाय॥३॥१२
॥विहागसौ॥श्री॰दो॥मिश्री
कौरीजवहिनेरहीवाटवकुहे
र॥प्यारुकीवलिवेरअकुकी
जैनांहिअवेर॥१॥पदो॥चंपक
वाग॥प्यारुकीवेरअवेरन॥

से॰ २१ कीजियै लीजियै व लिजां उँघ
रघोरी ॥ कबकी वाट दिषी नैं दनंद
नमैंन वहीतैं मिश्री फोरी ॥ टे
क ॥ हठ नेक करौ वै ठौ चौकी पैं
संग लियै राधा गोरी ॥ जै श्री न
ट जुटि वैठे दोउ तन दिषि जी
वै जन मनी वो जोरी ॥ ॥ १३ ॥ वि
हांगरौ ॥ श्री ॥ स्ोग ॥ सोभा नि
धि सुष सिद्धि रिधि राधाधव कौ
धाम ॥ जहां हितु हित सख्यास र
जो श्री नट निज कर स्यामा ॥ प
दो चंपक नाला ॥ निज कर अप
नैं स्याम सैं वारी ॥ सुषद सेज रा
धाधव मंदिर सोभा निधि रिधि
सिद्धि महारी ॥ टेक ॥ हितु कै है २१

न हर षि सुंदर वर श्री तिहि श्री न
परची रुचि कारी ॥ जै श्री नेह
करत परचार स्मा रिऊ वन घांन
वल्लेना प्यारी ॥ ॥ १४ ॥ विहाग
रौ ॥ लष्या केदारौ ॥ श्री ॥ दो ॥ मे
रे मन के सफल सव नये मनोर
थ पुंज ॥ हरि देषौं पौ दे दोउ मं
गल महल निकुंज ॥ १ ॥ पद
॥ चंपक ताल ॥ कुंज महल श्री
ज मंगल होरी ॥ किसलय द
ल कुसमन की सज्या ता पर वि
छई पीत पिछौरी ॥ टेक ॥ नये
मनोरथ मेरे मन के श्रीदैं नीलां
वर पौढ़ि हैं जोरी ॥ नैन श्रोट कै
श्री नट देषत क्रीडा करत कि

से॰
२२

सोरकिसोरी॥ ॥ ॥चितहीं गी
गे॥श्री॰दो॰॥ढारौं निज कर चं
वर लै धारौं नैंन निनेह॥ सोवत
जुगलकिसोर जे हां से ऊं चरन नेस
देह॥१॥ पद॥इकताला॥ सोवत
जुगलकिसोर चंवर हो ढारौं॥
कबकूं के से ऊं चरन नैंन निमैं
नवत मनेह सुधा रस धारौं॥
टेक॥ कबकूं कर पदपल्लव राधे
के अपने नैंनन कनीनन नैं सारौं॥
कबकूं कर श्रीनटनंदलाल के
कोमल चरन कमल पुचकारौं॥
॥२८॥ ॥इति श्री सेवा सु
षसंपूर्णं॥ ॥अथ सहजे
सुष लिष्यते॥ राग राम कली॥ श्री॰ २२

दो॰॥ अंग अंग दुति माधुरी विव
सुष चंद चकोर॥ श्रीनट सुघट
ह छिन अटक नटवरन वलकि शो
र॥१॥ पद॥ इकताला॥ बसौ मेरे
नैंननि मैं दोउ चंद॥ गउर बरन
वृषभानुनंदनी स्याम बरन नंद
नंद॥ टेक॥ गोकुल रहे लुभाय
रूप मैं निरषत आनंदकंद॥ जै
श्रीनेह प्रेम रस वेधन क्यों छूटै
हट फंद॥ ॥१॥ राग रामकली॥ श्री॰
दो॰॥ जोरी गोरी स्याम को उथोरी र
चिन बनाय॥ अति विंवत तनप
रसपर श्रीनट उलट लषाय॥ ॥
पद॥ इकताला॥ राधामाधव राजै
धाम॥ अरस परस अैसे प्रति विंवि

स० २२

न स्याम स्याम मा मानौं स्यामा स्याम॥
॥टेक॥ चकित चंचलु निज छवि
अवलोकित गउर स्याम मिलि
गई अरुनाई॥ जैसैं पुष आयें द
रपन तट तुरत तिही छिन रँग प
लटाई॥४॥ अंग निअंग अनं
ग रही छवि छाय समीप नयो जो
जाकी॥ जै श्री नेह निकट देष
तहु तिनंदनैं दनेह षजानसुता
की॥५॥ राग बिलावल॥ श्री दो
॥ प्रेम कला सुर सहित पियक
हत प्रिया सौं बैंन॥ हार उदार
निहारि उर चहत चतुर चित लै
न॥५॥ पद॥ इकताला॥ परसप
र निरिषि थकित नयेनैंन॥ प्रे २२

म कला नर सुर राधे सौं बोलत श्री॥
हत बैंन॥ टेक॥ हार उदार तिहार
निहारौं राधे यह मन लैंन॥ श्री न
टलटक जो निहितकार निभेई
स्याम सुष दैंन॥१॥३॥ बिलावल
॥ श्री॰ दो॰॥ सुमन सहित श्री हत
अमल जा मधि निज प्रतिबिंब॥
देषि दिषावत जमुन तट अति उ
तकट अबिलिंब॥ पद॥ तिताल
॥ मंजु कुंज बकारै प्रिया प्रीतम मि
लि बैठे जमुना के तीर॥ गहवर॥
कुसम तरंग संगासौं सीतल मंद
सुगंध समीर॥ टेक॥ सुमन सहि
त चचका कैत श्री हत अदेषुतदे
षि दिषावत नीर॥ श्री नट अति उ

स॰ २४ नकट तट राजै स्यामा स्याम छवि
जल खिगॅनी र॥११॥ राग कानडी
॥ श्री ॥ चौ॥ सुकर मुकर निरख
त दोऊ मुख ससि नैन चकोर॥ग
उर स्याम अभिराम अति छवि न
फवी कछु थोर॥१॥ पद॥ तिताल
॥ गौर स्याम अभिराम विराजैं॥ श्री
ति उमंग अंग अंग नरेरँग सुकु
र मुकर निरखत नहिं लाजैं॥ टे
क॥ गंडसौं गंड बाकु ग्रीवा मिलि
ख्यलि बिंबित तन उपमा लाजैं॥
नैन चकोर विलोकि वदन ससि
आनँद सिंधु मगन भये भ्राजैं॥
१॥ नील निचोल पीत पट कै तट
मोहन मुकट मनोहर राजैं॥ घटा २४

छटा आखंडल कोदंड दो उनन॥
एक देस छवि छाजैं॥२॥ गावत स
हित मिलन गति प्यारी मोहन मु
ख मुरली सुर बाजैं॥ श्री नट नैट
कि परे दंपति दृग म्हरति मन ऊँ
एक ही साजैं॥३॥ राग कानडी॥
श्री ॥चौ॥ नव वन चतुर दस कौ स
बै सुंदर ता सिरमोर॥ सुंदर वर जो
री वनी हंदावन निज ठौर॥१॥ प
द॥ तिताल॥ हंदावन ए क सुंद
र जोरी॥ केलत जहां तहां वंसीव
ट नँदनँदन हे खभान किसोरी॥
टेक॥ नव वन चतुर दस कौ सुंद
रता सुंदर स्याम राधिका गोरी॥
जै श्री नटह कहां लौं बरनौं रस ना

स० एकनांहिं लषकोरी ॥ १ ॥ कानडी ॥ क
२५ नडी ॥ श्री० दो० ॥ नषसिषसुष
माके दोऊ रतनागर रसिके स ॥
अदभुत राधा माधव जोरी सह
जसुदेस ॥ १ ॥ पद ॥ तिताल ॥ रा
धा माधव अदभुत जोरी ॥ सदा
सनातन इक रस विहरत अवि
चल नवल किसोर किसोरी ॥ टे
क ॥ नषसिष सब सुषमा रतना
गर भरत रसिक वर हृदै सरोरी ॥
॥ जैश्री जेह कटक ककर कुंडल
गंड वलय मिलि लसत हिलो ॥
री ॥ ७ ॥ कनडी ॥ श्री० दो० ॥ द
र्पन मैं प्रतिबिंब ज्यौं नैंन जु नैंननि
मांहिं ॥ यौं प्यारी पिय पलक हू न्या २५

रे न हिं दरसां हिं ॥ १ ॥ पद ॥ तिताल ॥
प्यारी तन स्याम स्यामा तन प्यारौ ॥
प्रतिबिंबित तन अरस परस दो ॥
ऊ एक पलक दिषियत न हिन्या
रौ ॥ टेक ॥ ज्यौं दरपन मैं नैंन नैंन
मैं नैंन सहित दरपन दिषवा ॥
रौ ॥ श्री जेट जोट की अति छवि
ऊपर तन मन धन नवछावरि
डारौ ॥ २ ॥ ५ ॥ राग रास इसौ ॥ श्री०
दो० ॥ वृंदावन कुलवारि मैं प
हरि फूल उरमाल ॥ विहरत
श्रीहरिप्रीयाजु आनंद नंदन गोपा
ल ॥ १ ॥ पद ॥ चचरीताल ॥ नंद
नंदन गोपाल लाल हरिप्रीयाजु नडु
लारी ॥ विहरत वृंदाविपिन मैं ॥

स० ९ अतिप्रीतमप्यारी॥टेक॥कर
२६ मपरसपरसंनहोलतैसिपकु
लवारी॥श्रीनटअगदीनीसैंवा
रिहरिप्रियाउरधारी॥ ॥१॥
रागकाफी॥आन्दो॥चंचल
चिकनेलगोहैंअरुनवरुन
रसअैन॥अनियारेअतिना
गरीनागरकेएनैंन॥ ॥पद॥
तिताल॥नागरीनागरकेनैं
नअनियारे॥अतिअनूप
निजरूपनिहोरेपरम
प्रानप्रियप्रीतमप्यारे॥टेक
॥नृकुटिमरोरनिगूढनाव
सौंडोराकोरप्रेमफंदवारे॥अ
रुनवरुनपैंनेंरसभीनेंचिक

नेंलगौंहैंप्रीतपनपारे॥१॥पल
कललकमनौंअनिलनलिन
पैंआलमुदितहितपंखपसारे॥
अंजनअमिलरेखईषदलसि
वलिनागनमनुखंजनगारे॥२॥
चंचलकमललित्तप्रफुलित
मनुमेलतगतिनिरखनरसना
रे॥श्रीनटसुरतसमरमैंकोबि
दमनटकोटिकेंदपदहांवारे
॥३॥ ॥रागकाफी॥आन्दो॥
रोचनस्यामसुधीरकेमोचनवि
रहविसाल॥विनहींअंजनएअ
होखंजनलोचनबाल॥१॥पद॥
तालचर्चरी॥लडैतीकेखंजन
लोचन॥विनहींअंजनदियैं

स॰ २७ निहारी विरह विथा उर मोच
नां ॥टेक॥ चपल चाल लालैं अ
वलोकत रूप लुनाय सकों च
नां ॥ श्रीभट सुघर सुधीर स्याम
कौं करत निरंतर रोचनां ॥१४॥
२॥ राग बिलावेल ॥ आन्दो ॥
रस बस कैसर वस दियौ लपि
पिय स्याम सुजांन ॥ अंजन षंज
न नैंन मधुर धरे कटारे सांन ॥
१५॥ पद ॥ इकताला ॥ अंजन षं
जन नैंन मैं लखि नंद दुलारे ॥
राधे रस बस सौं बरे सर्वस दियौ
प्यारे ॥टेक॥ मैंन सैंन रनके र
नकौं सांन धरे कटारे ॥ श्रीभ
ट स्याम सुषद नैंनकौं स्यामा स॰ २७

विधारे ॥१६॥ राग सह सौ ॥ आ॰
दो॰ ॥ राधे नैं रूपके पटलर क
हिये कौ हि ॥ सर्वस तजि रस व
सन्य ये नैंन कोर तन चाहि ॥१७॥
पद ॥ चपकताल ॥ नैंक नैंनकी
कोर मोर मोहन वस कीनैं ॥ रा
धे नैं रूपकी पटतर कौ दीनैं ॥
टेक ॥ कमल कोस अलि ज्यौं च
लै तारे रंग भीनैं ॥ श्रीभट तन अंज
न छुवै लाल नलवलीनैं ॥१८॥ ३॥
राग कैदारौ ॥ आन्दो ॥ जित जित
भामिनि पग धरै तित तित नावत
लाल ॥ करत पलक कपिंजन के
रूप विमोहित वाल ॥ पद ॥
तिताल ॥ प्यारी जूकै प्यारौ रूप बि

स॰ मोहित॥ करतपलकपांवडेवि
२८ हारीधरतचरननभाममनिजित॥
टेक॥२॥है प्रीतिपरतीतिनिरंत
रट्योवारिसवचितचित॥जै॥
श्रीजदहप्रेमवसप्रीतमनिसवा॥
सरजानैं कित॥॥४॥रागकेदा
रौ॥श्रा०दो०॥सां वरससिसंग॥
लसिप्रियानरीसरसिरसचंद॥
डोलत हैश्रीराधिका अलिहिश्री
जुआनंद॥॥पद॥श्रीराधिका
श्रीजआनंदमैंडोले॥सांवरेवेद
गोविंदकेरसनरीहरसरीकोकि
ला॥मधुरमुरबोलै॥टेक॥१॥ह
रिपटनीलवरकनककेहारावलीह
ष्ठ लियैंश्रारसीरूपलोले॥के २८

हैश्रीजदहआजनागरिनीकीव
नीरूसमकेसीलकीग्रंथिषोलै॥
॥२॥केदारौ॥श्रा०दो०॥प्रीति
रीतिरसवस नयेजदपिमनो
हरमैंन॥तदपिरटैनिजमुखस
दाराधेराधेवैंन॥॥पद॥चपक
ला॥मोहनराधेराधेवैंनबोलै॥
प्रीतिरीतिरसवसनागरिहरि॥
लियोप्रेमकैमोलै॥टेक॥हास
विलासरासराधेसंगसीलश्रा
पनौंतोलै॥श्रीजदजदपिमदनमो
हनतउ हाशिहरिसिरडोलै॥१॥
॥राग॥मसो॥श्रा०दो०॥गहि
मुरलीगोपालकीलीनी प्रियाप्रवी
न॥जैदहकैश्रीचलनपरसपरहरिव
ऊकरतुअधीन॥॥पद॥चपक॰

सु.न
२९

मुरलीश्रीगोपालकीललनागहि
लीनी॥मंजुजुगलअँगुलीनिकी
पंकतिदुतिदीनी॥टेक॥नील
सुमनिकंचनषचितरंजितम
जुकीनी॥श्रीनटअँचलपरस
परहरिकरतअधीनी॥४॥७॥
कनडी॥आन्दोल॥चकितनैं
नलषिवैंननयेयाकुलअति
हीस्याम॥हसीसषीकीओट
कैस्यामासवसुषधाम॥४॥प
द॥तिताला॥स्यामामदनमोह
नकीहरिलईवंसी॥चकितनैं
नवैंनव्याकुललषिसषीओट
दैहंसी॥टेक॥इकसषिनैंन
सैंनसमुझायेप्यारीपरमप्रसं
सी॥श्रीनटमुकटलटकचर २९

टेक॥सघनपांनसवसुधिविसराईइतनीकहिनालीजै॥
उ.७

नैनतटकरतहैरसिकवतंसी॥८॥
९॥कनडी॥आन्दोल॥विनदामनलि
योमोलहौंकरऊंजोभावैसोहि॥अ
होराधेविनतीकरौंमुरलीदीजैमोहि
॥४॥पद॥तिताला॥राधेविनयकर
तमोहिमुरलीदीजै॥विनदामनम
नौंमोललयोहौंजोभावैसोकीजै॥
श्रीनटसुघटकिसोरकिसोरीअर
सपरसरँगभीजै॥४॥१०॥कनडी॥
आन्दोल॥कुहकालसजुतलाल॥
चौललितानैकुटिलबुलाय॥दमे
वतापूजनबेलाढिलीदईभालमन
भाय॥४॥पद॥कुहकालसजु
तमदनगोपाल॥हेदावननेवृं
जमदनमैंविहरतमनरंजननैंदेला
ला॥टेक॥कुटिलबुलायचलायेल

स०
लिलादेखिदईदयनाउरमाल॥अ
नटसंपुटकरिहरिनीचेमुदितकि
कुँनलोचनतुविमाल॥॥वि
हागरो॥आ०दो०॥कुँवरिकिसोरी
नागरीपहिरीजैनिजहार॥तुम
करिऔरैलीजियैवकुफूलीफु
लवार॥॥पद॥इकताल॥वहफू
लीफुलवारियैंदीजैनिजहारै॥
उरऔमोतीमालमैंहौंलेउँसुरझा
र॥टेक॥कुँवरिकिसोरीनागरीस
खिऔरसँवार॥श्रीनटनिपटल
हैंलख्यौकहिलेकुँअनार॥॥
॥ ॥इतिश्रीसहजसुखसंप
र्ण॥ ॥श्रीसुरतसुखलिख्य
ते॥रागबिहागरो॥आ०दो०॥उठ
कतसहचरिनिरखिसुखहियमैंन

रीफुलास॥नवनिकुँजरसपुंजछे
विस्यामास्यामनिवास॥॥पद॥च
पकताल॥निकुँजमैंपुंजलगीन
केतिनमैंस्यामास्यामविराजै॥सी
तलमंदसुगंधत्रिविधिमारुतसे
वतरितुराजै॥टेक॥उठकतजि
नतितलतासुखिरसखिहियैफूला
सीसाजै॥अैतरऔंतररत्यौनदंप
तिश्रीलददिखिनयेकाजै॥॥वि
हागरो॥आ०दो०॥वकुलतियांस्य
ल्यौविपेनरतियांसरदसुहात॥न
तियांआवतिकरतउरछतियांअं
कलियात॥॥पद॥चपकताल॥
दोऊमिलिकरतआवतीवतियां॥म
दनगुपालकुँवरिराधेकैनवमनि
अंकलियतउरछतियां॥टेक॥

५०
३१ नैसियछिटकिरहीउजियारीपूर
नचंदसरदकीरतियां॥केलिरू
पनीजमुनाश्रीभटवृंदावनकुलै
वकुंजतियां॥२॥बिहागरो॥श्री
दो॥ कबहूलैनिजकरनमैंलाव
ननैंनविसाल॥श्रानप्रियामनह
रनकेचरनपलोटतलाल॥१॥प
दा॥इकताल॥प्यारीजूकेचरनप
लोटतमोहन॥नीलकमलके
दलनलपेटेअरुनकमलदल
सोहन॥टेक॥कबहुकलैलै
नैंनलगावतअतिधावतज्यौं
मोहन॥जैश्रीभटछबीलीराधे
होतजगेतैंछोहन॥२॥बिहा
गरो॥श्री॥दो॥प्यारीप्रीतमपर
सपरसज्यौंरंगअनुराग॥अध ३१

रसुधारसदेतहैलेतस्यामवड़भा
ग॥१॥पद॥इकताल॥श्रीवृंदावि
पिनेस्वरीरससिंधविहारी॥रस्यौ
परसपरप्रेमछकेमवाद्यौअतिना
री॥टेक॥अरप्यौपियहिय
पासकैंनिजअधरसुधारी॥श्रीभ
टवड़भागीगुपालपीयौरुचिका
री॥२॥५॥बिहागरो॥श्री॥दो॥
हितुबावरीनितिकुंजमैंराधामा
धवकेलि॥श्रीभटनिपटहितन
कारिनीहरषिनिरषिरसरेलि॥
॥पद॥चपकताल॥रसकीरेलि
वेलिअतिबाढी॥दंपतिकीहितु
बावरिबिहरनिरहोसदामेरचि
तचाढी॥टेक॥निरषतरहौंनिप
टहितकारनिप्रियप्यारनकीगु

नगतिगादी॥ जैश्रीनटउनकठ
संघटसुघकेत्तिसहेत्तिनिरंत
रछाढी॥१॥५॥ केदारो॥ श्रीगा
दोग॥ वालवाकुंवरलालकीकि
येकंउकहियेंहेत॥ घनस्याम
लकैहेतमनौंदामिनिसीछवि
देत॥१॥ पद॥ तिताल॥ कीनेंस
चिस्यामस्यामासेंन॥ असलसैं
अँगरागकोविटवदनईषदवै
न॥ टेक॥ वाललालवाकुंवकंउ
ककियैंदियैंहियैंहेत॥ स्याम
घनतनदामिनीवनिताभिनी
छविदैन॥१॥ गोविंददयैलासु
रतसजितश्रमलटपटसनीर॥
प्रियाफवीमनुकोरससिकौद
वीघनगंभीर॥२॥३॥ रागमास

॥ श्रीदोग॥ दोउनदृगमृगवाल
मौंगतिगतिमतिरहेमूल॥ श्री
नटवरवटफैलदूनिरषतश्री
नंदमूल॥१॥ पद॥ प्रियामुषसुष
मादेषिकैंमोहेकुंजविहारी॥ श्री
धरमधुरपरपीकलीकसीकसी
सुधारी॥ टेक॥ तनयकोपिदृग
रोपिकैंकोरसौंनिहारी॥ जैश्री
नटघटनादेषिकैंजांउंबलिनृ
लिहारी॥१॥७॥ रागमाला॥ श्रीदो
॥ अकुराधेरुपगांनकीउंवरि
किसोरीवाल॥ थोरीवैसोरीहिमे
मोहेमोहनलाल॥१॥ पद॥ टेक
लाल॥ जैजैश्रीरुपनागरिकिसोरी
॥ राजतरसिकअंकअंकितसी
लसीस्यामसंगगोरी॥ टेक॥ जैजैरा

सु०
३३

षेरूप अगाधे चितै चारु चित चो
री ॥ श्री नट नटवर रूप सुंदर वर
मोहै तैं थोरी वैनौरी ॥ ३ ॥ ८ ॥ ॥
इति श्री सुरत सुष संपूर्णं ॥ ॥
अथ उत्साह सुख लिष्यते ॥ अथ
१ इकताल बसंत उत्सव ॥ राग वसंत ॥ आ०
दो० ॥ मंगल विमली सबहि मि
लि षेलौ हिय फूल संत ॥ मान वि
रह दुष मेटे नौं आयौ रितुराज वसं
त ॥ १ ॥ पद ॥ आयो रितुराज वसंत
हि तनयौ हीय कौ ॥ अब मिलि मं
गल विमली षेलौ मान विरह ग
यौ जीय कौ ॥ टेक ॥ चित मैं चाह
दोह श्री नकौ सहज संग नयौ पी
य कौ ॥ श्री नट कूट कोप करि गा
ग विदा पज रायो घीय कौ ॥ १ ॥ राग ३३

वसंत ॥ आ० ॥ दोहा ॥ नव किसो
र नव नागरी नव सव सौं ज रुसाज ॥
नव वृंदावन नव कुसम नव वसं
त रितुराज ॥ १ ॥ पद ॥ इकताल ॥
नवल वसंत नवल वृंदावन नव
हि फूले फूल ॥ नवल हि कान्ह
नवल सब गोपी निर्तत एकै तूल
॥ टेक ॥ नवल हि साषि जनादि
कुमकुमा नवल हि वसन अमू
ल ॥ नवल हि छींट बनी केसर की
मेटत मनमथ सूल ॥ २ ॥ नवल गु
लाल उडै रंग बूका नवल पवन
कै झूलनि नवल हि बाजे बाजै त
श्री नट कालिंदी कै कूल ॥ २ ॥
॥ राग वसंत ॥ आ० दो० ॥ हरष्यौ सु
न ब्रजराज कौ निरषि वसंत रितु
साज ॥ श्री नट हट कर कछू नहीं

उ० करिहै मन के काज ॥॥ पद्माकर क
३४ लाल ॥ आज मन कारज करियेरी
॥ हरख्यौ सुत ब्रजपति कौ अति
हीलचि चित हरियेरी ॥ टेक ॥ रि
तु कौ राज बसंत निरखि सोई सुख
उरधरियेरी ॥ भीनट हट कनहीं
औवनतन कछु महा मुदनैरियेरी
॥१॥३॥ अथ होरी ॥ राग बसंत ॥
आदि ताल ॥ विविध भांति सब सौंज
सजि सुखद सरोवर रूप ॥ होहो हो
री बोलहीं स्यामा स्याम अनूप ॥
॥ पद ॥ राग कल्यान ॥ होहो होरी बोलै
स्यामा स्याम ॥ सचिर रूप सरोवर गु
के नैं श्याम ॥ टेक ॥ जहां आई कुंवरि
चेलि औलि लै कुंज ॥ तहां आय मि
लै मोहन निकुंज ॥ सखि जु जाप सारि
गुलाल मेलि ॥ बनाय नसहेत मानौं ३४

न द्रुम केलि ॥॥ रंग देरिक मोरी ऊ
मकि फिरै सनीलौं अलमानौं चप
ला बिंबनरिचर और रंग गो कुल सु
चंद ॥ कर त्रि निसु केलि मनु मदग
यंद ॥ राग नीजि चीर लगे अंग ॥
अंग ॥ लखि नंद नंदन मन नयो पंग
॥ रंग भीन कुंवरि डा रयो अबीर ॥
मर्कत मनि मानौं सी ख्यौ घीर ॥ अ
नवरंग बूका उडयो गुलाल ॥ वैसं
धि जलद मानौं चंद मा ल ॥ गारी गा
वै गोपी पीयूख दैन ॥ सोई सुनै च
स्याम जू के हिय मैं चैन ॥ पिच
कारि नरी रंग राधे औ र ॥ छवि ऊ
परवारौं जन्म कोरि सो रस सुगंध
केसरि कै नीर ॥ आनंद कंद मल
येसमीर ॥ पा ॥ वनमाली वल्लवी तुग

३०
३५ हे आइ ।। मनु कोटि लड़ित घन प॰
टी जाइ ।। सखी लै कुँवरिया कौं भलै
^हिंन न्हवाइ ।। फिरि मैं पाइ हैं असौ दा
ह्याइ ।। दौरी कमोरी स्याम पर ईसि
पा ह्या ।। सुख लेपन करि दीये कुंस
या ।। सब हँसी लसी करि दे इ ताल
।। कहि ऊँचै सुर हारे गुपाल ।। [illegible] ।।
हरि बीचन मौं मैं च्यौ कौ च रंग ।।
सरसै ज्यौं मेघ पै सोम संग ।। प्या
री चंद्र मुख नि तो घे हरि चकोर ।।
द्वि क न क मोरि नि मधि मन
^गारि कुमोर ।। [illegible] ।। रँग डारि दै नगे जि
नाल ।। सुसमोन समर जे सैं पर
त चाल ।। फिरि लई गुपाल पि
चकारी हाथ ।। घन तैं बनि का॰
सि ज्यौं तडित जात ।। [illegible] ।। बर स्रमत स्र

स्रम रख ब्रजराज लाल ।। फूली कुँम
दनि मानौं गोप बाल ।। बऊ बू का॰
उड्यौ रँग अंध ऊथ्यौ [illegible] ।। फिरि क
रि गोपा गुलाल पेल ।। करि लियौ ^ल
वरावरि व कुँवरि बेल ।। है जराज॰
कुँवर सौं बेलै फाग ।। फूली कुम
दनि ज्यौं कुँवरि पराग ।। [illegible] ।। निति अ
नंग केलहि तहिय मैं राग ।। कहैं क
मला सी ये धनि सुहाग ।। फाग बे॰
लि चली गावत सुबाद ।। देम त श्री
नेट कै सौ प्रसाद ।। [illegible] ।।४।। अथ स
ख केलि ।। [illegible] ।। [illegible] दोहा ।।
तरन हपा रनि त्रिया कौं सिखवत
पिय सुख सार ।। रचि लीला [illegible] रचि का
रनी बेलहि बारि विहार ।। [illegible] ।। ह
काला ल ।। बेलैं बारि विहार बिहारि॰
नी ।। रचि रंज सम जन मिसि लीलार

सिंकौल रुचिकारिनी॥टेक॥ज
मुनतरंगरहसिरसझरनअंगन॥
अंसुकहरनी॥श्रीनटनटनागर
प्यारीकौंसिषवनतरनहथ्यारनी
॥५॥रागसारंग॥आ०दो०॥मेल
नकलिकाकमलकीझेलनझु
किरसझेल॥राजतअतिजलजौं
नपैंकरतजुगलजलकेलि॥
पद॥इकताल॥जलकेलिकरन
रसकेंदनी॥राजमानजलजौंनउ
परिदोऊकौं भोजनकीनंदनी॥
टेक॥कलिकानवलकंवलकी
मेलनझेलनसरससुगंधनी॥श्री
नटजीनैंकौंनरसिकदोउडार
ननेहरसफंदनी॥६॥अथव
षोरितुवेलार॥रागमलार॥आ०
दो०॥छोटेगाढेकुंजनतरबाटेमैन

मरोर॥श्रीजनकबइननहगनितैं॥
देषौजुगलकिसोर॥पद॥इ
कताल॥जीजनकबदेषौंइननैं
नौंस्यामाजूकीसुरंगचूनरीमोह
नकौउपरैंनां॥टेक॥जुगल॥
किसोरकुंजनतरठाढेजननकि
योकछुमैंनां॥उमगीघटाचहूं
दिसश्रीनटजुरिआईजलसैंनां
॥७॥मलार॥आ०दो०॥वस
नचीजिहैंआमिनीछिनकनिक
निवारौमेह॥मोहिसहित्तलायक
तुमहिछतहमारोएह॥पद॥
इकताल॥श्रीराधेजूसुंदरछेलाछ
मकौ॥मोहिसहितश्रीस्यामलला॥
यकवनियौंवनिकविचारौ॥टे
क॥जीजैंगेउबसनतननामनि॥

७०
२७

छिनइकमेंहनिवारौ॥श्रीनटह
टनकियोहिलजोन्यौंश्रांनिग॥
त्यौहियप्यारौ॥५॥ मलार॥श्री-
दोग॥ जमुनाजलमैंनिरषहींकु॥
किचंचलनिजकहि॥ दोउजन॥
घटेलपटिउरएकहिसुहियामां
हि॥५॥पद॥इकताला॥ घटेदो
ऊएकहिसुहियामांहीं॥ वंसीव
टतटजमुनाजलमैंनिरषनचं
चलकहीं॥टेक॥कारीकमरि
याअंतरदैपलिस्यौमांस्यौमलप
टांहीं॥श्रीनटकमलकूटमैंकंच
नजलवरषतजलकोंहीं॥५॥
मलार॥श्री-दोग॥स्यौंज्यौंचूंमरि
मनवेगास्यौंसौंलावनहीयजनी
ततकूंजनतैंदोऊआवतप्यारी २७

पीय॥५॥पद॥त्रगनीजतकूंजनतैंदो
ऊआवत॥ज्यौंज्यौंवूंदपरतचूंनरि
परत्यौंत्यौंहरिउरलावत॥टेक॥
अतिगंभीरकौनेमेघनकीझुम॥
नरछिनविरमावत॥जैश्रीनट
रसिकरसदंपतिहिलिमिलिहि
यसचुपावत॥५॥ अथहिंदोर
॥मलार॥श्री-दोग॥वटिजुटिउ
कूंऔरेंदोउतनघनदामनिजोर
॥फूलफवेउरफूलहींलैंडिलि॥
लालहिंडोर॥५॥पद॥इकताला॥
फूलतलाडिलीलालहिंडोरैं॥फू
लफवेश्रैं॥अंगनिओटिदहिन॥
टिजुटिदोउकुंऔरैं॥टेक॥पं
नेअधारकडोलअमोलकनवल
पाटकीडोरैं॥जामैंनवलकिसोर

^ अपनी

३८ किसोरी अपनी छोरैं॥ कारीघट
३८ छूटन कैं डोरा मोरा वोलत जोरैं॥
कोकिला कलजल लैकन वरषत
थिर गंभीर घन घोरैं॥४॥ सबै औ
र सुंदरि तैं सुंदर बनी सषिन की
कोरैं॥ देषि दंपति फूलै न्हूलै दा
मिनी घन जोरैं॥ मन मुष बैठ अजै
ऊंव रिहरि गावै सषी सुर थोरैं॥
स्याम स्यांम सषी सुष कारी फूल
सहज झकझोरैं॥५॥ जिल लित
झुलत झुलत तित ही तिन सषी हृ
गन कौं मोरैं॥ तन मन दैत नेम यु
गई दृष्टि तामो दर चित चितचोरैं
॥ रस भुजगहे लहे चित ईछै तरती
अमिल लतन गोरैं॥ श्री नट वंसी
वट तट निरषत उठि उरह रषहि ३८

लोरैं॥६॥११॥ मलार॥ श्री दोधा ज
मुना वंसी वट निकट हरन हिंडोरौ
हीय॥ रंग दे आदि झुलावे ही फूल
त प्यारी पीय॥ पद॥ इकताला॥ हिं
डोरै फूलत है पिय प्यारी॥ श्री रंग
देवि सुदेवि विसाषा झोटा देत ल
लितारी॥ टेक॥ श्री जमुना वंसी वट
के तट सुनगभूमि हरियारी॥ तैसे
ई दादर मोर करत धुनि सुनि मन
हरत महारी॥१॥ घन गरजनि दा
मनि तैं डरी पिय हियलपटी सुकु
वारी॥ जै श्री भट्ट निरषि दंपति छ
वि दैत अपनपो वारी॥२॥२॥ श्री
[illegible] विनो॥ राग मलार॥ श्री दो
॥ कोकिला न कैवा न हित जसुम
ति गर गवुलाय॥ कह्यो पवित्रा द
मर त्विप हिरावकु रिविसराय॥१॥ ष

उ॰ ३९
दा॥ इकताल॥ पवित्रा पहरे कुंव
र कन्हाई॥ अति अभिराम दाम मम
नु दामनि घनस्याम मैं लपटाई॥ टे
क॥ पवित्रे सके ध्यान ज्ञान हित
जानि जतन जसुमाई॥ नंदकि नाव
सनमांन सहित जब लीनैं गरग
बुलाई॥ तुम हम मेरे घर के जु परो
हित लगौं तिहारै पाई॥ यह बाल
क कमल कैनन चपल तैं सोई करौ
उपाई॥१॥ सांवन सुकल पछिए
कादसि गोप मिले सब आई॥ बो
ले गरग बिचार मंत्र तुम सुनौं नंद लै
नैंद राई॥ पंचरंग की दाम रचावौ
नाना रतन लगाई॥ आगम निग
म मंत्र सौं नीकैं रष्या करौ बनाई
॥२॥ सुनैं बचन आचारिज के है
जराज सोई करवाई॥ मंत्र पवित्रा ३९

दाम स्याम गरगर गद ईमि हेराई॥ भ्रमा
नौ घन थिर कौनी दामनि सो मोर
ग लसु हाई॥ वा छौ मं गल सब हे ज
पुर मैं श्रीभट नई मन भाई॥३॥१२
॥ श्री लाल जू कौ बधाई॥ राग मल्ला
र॥ आ॥ दो॥ भागवती जसुमात
अति भई प्रफुलित लखि लाल॥
गोकुल मंगल आज सखि बाढ्यौ बि
सद बिसाल॥१॥ पद॥ इकताल॥
गोकुल मंगल आज बधाई॥ रानी
जसुमति कैं प्रगटे हैं सुंदर कुंवर
कन्हाई॥ टेक॥ गोपी ओपी प्यार
लियें कर रबि छबि दे बिलजाई॥
गावत धावत अति छबि पावत सु
रति लगन सुहाई॥ देखि देखि मुख
स्याम सुंदर कौ अंग अंग निस छुपा

ई॥ भाग मती जसुमति रानी अति सु
न जायो सुष दाई॥ ॥ निर्त्तति की
रति सु त्रिया निज सुष कहि कहि
व होत बडाई॥ ब्रजरानी सनमां
नी तैसें जो जैसें मन भाई॥ गोपी
गोप ग्वाल गन अनगन आनंद
मगन मल्हाई॥ ॥ भाग सराहत
ब्रजरानी के भाषत रूप लुनाई॥
कहत आज हम ब्रजवासन की
सकल आस पुरवाई॥ जग वंद
न नंद नंदन जायौ सुष छायो ब्रज
आई॥ जै श्री वल्लभ रसिक नेंनन
मन भई महा मुदिताई॥ ॥ ॥ ४
॥ श्री प्रिया जू की बधाई॥ राग
मलार॥ आ दो॥ ब्रज जन गो
पी गोप गनन नंदादिक मन मो

दा॥ ॥ पद॥ इकताल॥ आज ब्रज
न मिलि मंगल गावै॥ गोपी गोप न
गर कीरति के गा षगाय प्रगटावै॥
टेक॥ प्रगटी श्री राधा रूप अगा
धा सुष साधा नावै॥ मिलि आ
ये नंदादिक सब ईश्रम परस परे
भावै॥ ॥ कोइ कगावै कोइ क बजा
वै कोई दही लै धावै॥ आय आम
न रसां नें वीथनि जैजैकार करावै
[illegible] नंद सौं मिलि धाय कैं अंक
सों अंक लगावै॥ श्री वल्लभ निकटे
नि हारि राधिका स्याम नैंन सुष पा
वै॥ [illegible] ॥ अथ [illegible] सवैया॥
[illegible] ॥ मोहन वन
जन माल [illegible] कर केर तनु जा
[illegible] श्री नट लट कसु बानां अटके
नंद कुमार॥ ॥ पद॥ ताल जात्रा॥

ऊ. सजईसमाजआजमधुपज्यौंमुकं
५१ दचंद॥उझलउरोजरहतसुंदरीस
रोजहंद॥टेक॥[illegible]टितफटिक
मनिधरालरविविधिद्रुमबीचका
वरबलितराग[illegible]ऊंच वेक
दाकबिहंगछंद॥गोपीमंडल॥
कमलमालधमिलचलितनैसि
बालनालजोंनवेसमोनलन
सुपोनखेदबिंदु[illegible]नवलबी
लुका॥अनूपलावंलि[illegible]स
फूल[illegible]दलविकासविमलकलासु
धश्रमतासुगंद॥गोनीरखीरगा
नगुंजमनतित्र[illegible]करतमंजुता
नमोनदेतलेतसरससुधसुधा
सुछंद॥[illegible]॥चीरउडुलिकुसस्या
मघटातैंबयअंतिदामजुगलमि
लनजटकेचलनअरुननाभि ५१

यासकंद॥श्वेतआगपलितपंक॥
उन्नता॥हरिचंदनटंकजातजल
सुजीवगहनफूलमालवेलिबंद
॥५३॥करिनकाजुगकरनतूलव
फूलकंठसीसफूलजेलजेहमे॥
लवीचरेलरजसिंदूरजलकसं
द॥मधुरदमकरंदअधरकेसरि
आनंदकंदजैश्रीनटलपटांनिरु
चिरनीलांवरपीतफंद॥५४॥राग॥
केदारौ॥आ.दो॥करवरअंबु
जकंठभुजमकरतकनकस्थूल
॥श्रीनटरसमयनटरमतराधाम
नअनुकूल॥१॥पद॥केदारो॥
फूलीकमदत्रिसरदसुहाई॥जमु
नातीरधीरदोउविहरतकमलनी
लपीतकरमाई॥टेक॥नीलवर
नस्यामारुचिकीनीअरुनवरनता

३०
५२ हरिमनभाई॥ श्रीभट लपटे रहे
अंसनि कर मांनौं मरकत कनक
जराई॥१॥१०॥ अथ व्याह॥ राग मा
रू॥ आं दो॥ वेदी पुलिन विरा
जहीं मंडप वेलित माला॥ नवौ
किधौं यह रमौं है व्याह विहारी ला
ल॥१॥ पद॥ इकताल॥ श्रीव्रज
राजकै कुंवर जमांनौं व्याह है दाब
नरचौ॥ पुलिन बेदी विराजै दंप
ति देखि देखि सखि मन सचौ॥
टेक॥ कै पुरोहित रिचा उच्चारत
वेलित माल मंडप रच्यौ॥ जै श्री
भट्ट भांवरि परत नटवर अंक मा
ल प्रिया संग नच्यौ॥२॥११॥ राग
विहांगरो॥ आं दो॥ जिहि छि
न की वलि जो उं सखि तिहि छि
न भांवरि लेत॥ लाल विहारी सां ५२

वरौ गौर विहार नि हेत॥ पद॥
इकताल॥ जैसियविहार जिगौर
विहारी लाल सांवरे॥ जिहि छि
न की वलि जो उं सखी री परतति
ही छिन भांवरे॥ टेक॥ कंचन म
नि मर्कत मनि प्रगटी दरसां नैं
नैंद रंगां वरे॥ विधनार चित नहो
य जै श्रीभट राधा मोहन भांवरे॥
१॥१२॥ ॥ इति श्री उत्सव सु
ख संपूर्ण॥ ॥दोहा॥ श्रीभट
प्रगट न जुगल सतपद कै कंठ ति
ऊँ काल॥ जुगल केलि अवलो
कतैं मिटै विषै जंजाल॥१॥ एक
छपै एक दोहरा आदि अंत मधि
मांन॥ सत पद आनासन सहित
जुगसत हद परिवांन॥२॥ ॥

उ॰ ॥इति श्रीश्रीमद्वीलभाचार्यविर
४३ चितं आदि बाणी जुगल सत संग्र
हे॥ ॥छप्पय॥ रूपरसि
क सब संत जन अनुमोदन या
कौ करौ॥ दस पद है सिधांत बी
स षट ब्रजलीला पद॥ सेवा सुष
सोल है सहज सुष एकवीस ह
द॥ आठ सुरत सुष एक ऊन ब
उछव सुष लहिये॥ श्री जुत श्री
भट देव रच्यौ सत जुगल जु के हि
ये॥ निज जन जनन्या वरु चितैं कीये
इतने दये उर धरौ॥ रूपरसिक
सब संत जन अनुमोदन या कौ॥
करौ॥१॥ संवत १७३६ पाली वै
शाष वदि १२ ॥श्री ॥ ॥ ४३